चकमक

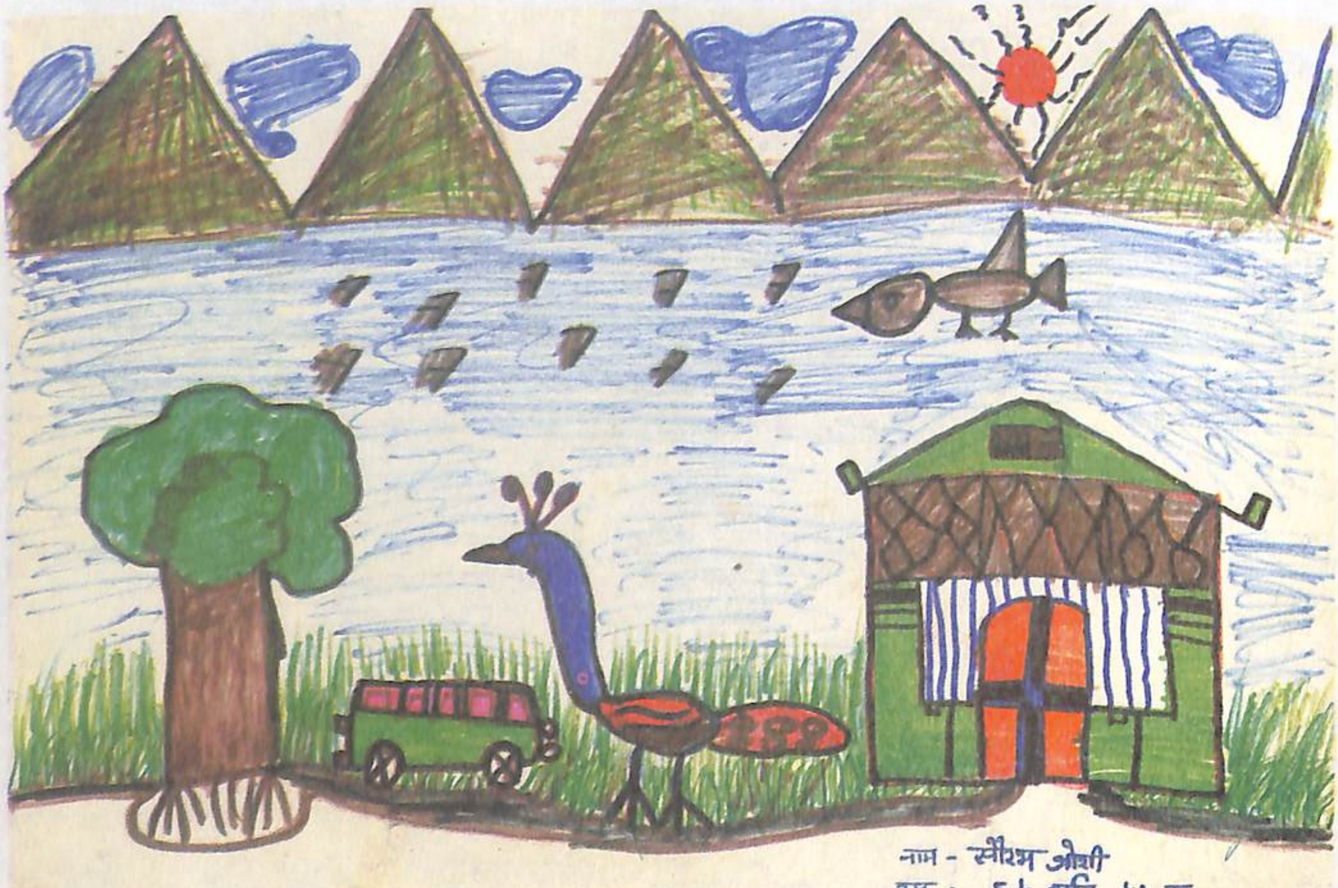
सितम्बर, 1999 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 10.00



पहिया



● उत्सव पटेल, पहली, भोपाल, म.प्र.



● सौरभ जोशी, छह वर्ष, इन्दौर, म.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

सितम्बर, 1999 के 168वें अंक में

बैलगाड़ी में पहिया, साइकिल में पहिया, तांगे में पहिया, रेलगाड़ी में पहिया। हर तरफ पहिया ही पहिया। कैसे बना पहिया। पढ़ो पहिए की रोचक कहानी ....पृष्ठ 5 पर।





टर्र टों, चीं...चीं... भिन भिन और कुंकड़ूँ को मिली एक गाड़ी और उसके खोटे पहिए। जो किसी काम के नहीं थे। क्या किया उन्होंने इन खोटे पहियों का? पढ़ो चित्रकथा में ...... *पृष्ठ 18 पर।*

मनभावन कविताएँ

रोचक श्रृंखला

हर बार की तरह

मेरा पन्ना



और भी बहुत कुछ

आवरण : वी. सुतेयेव 'स्टोरीज़ एंड पिक्चर्स' से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

चकमक का एक अर्थ तो सब जानते ही हैं- वह पत्थर जो रगड़ने पर चिंगारी निकालता है। लेकिन मराठी भाषा में इसका अर्थ है- मुठभेड़। चकमक का यह अर्थ भी उसे एक नया आयाम देता है। यह आयाम है- समय से मुठभेड़।

हम सब, हर पल समय से मुठभेड़ ही तो करते हैं, उससे जूझते हैं। यह मुठभेड़ ही हमारा आने वाला कल तय करती है।

चकमक के इस अंक में कुछ बदलाव देखे जा सकते हैं। वैसे हमारी लगातार यह कोशिश रही है कि चकमक में कुछ न कुछ नया करते रहें।

पिछले बरस शुरू की गई श्रृंखला 'हमारे शिक्षक' और 'हमारी आवाज़' को पाठकों ने पसन्द किया है। 'आओ खेलें : गाएँ गीत' श्रृंखला भी भा रही है। आने वाले अंकों में ऐसी नई-नई सामग्री देने की हमारी कोशिश रहेगी।

चकमक को हम आज के समय की मुठभेड़ बनाना चाहते हैं। इस मुठभेड़ को सफल बनाने में पाठकों का वैचारिक सहयोग भी उतना ही ज़रुरी है, जितना आर्थिक।

तो कलम उठाएँ और चकमक को चमकाएँ। समय से मुठभेड़ करें।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-15 अंक-3 सितम्बर, 1999

सम्पादन: विनोद रायना, राजेश उत्साही, कविता सुरेश, टुलटुल विस्वास

विज्ञान परामर्श: सुशील जोशी

वितरण: कमल सिंह, मनोज निगम, अशोक रोकड़े

सहयोग: राकेश खत्री, सुशील शुक्ला

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

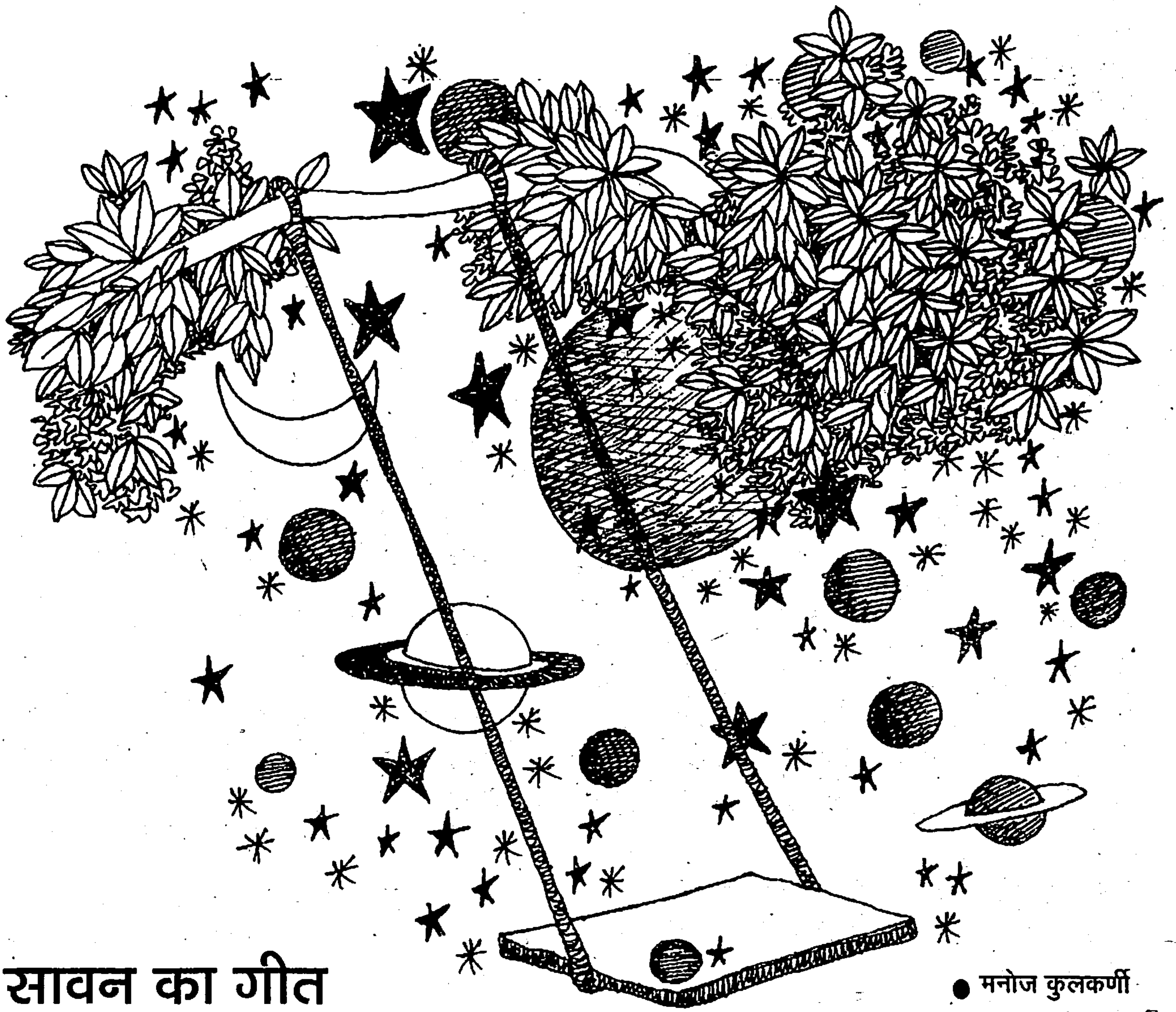
कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदेकी दरें

एक प्रति : 10.00 रुपए
छमाही : 50.00 रुपए
वार्षिक : 100.00 रुपए
दो साल : 180.00 रुपए
तीन साल : 250.00 रुपए
आजीवन : 1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



● मनोज कुलकर्णी

सावन का गीत

सावन का झूला इस बार
इतना बड़ा डालना
जिसमें समा जाए संसार।
उस डाली पर
जो फैली है आसमान के पार
उस रस्सी का
कोई न जिसका पारावार
एक पेंग में मंगल ग्रह के द्वार
और दूसरी में
एकदम से अंतरिक्ष के पार।

● नवीन सागर

जंगल में जाने की तैयारी



संचारी बिस्वास, साढ़े दस वर्ष, भोपाल, म. प्र.

मैं और मेरी सहेलियाँ जंगल जाने के लिए तैयार हुईं। सब ने समान तैयार कर लिया। और मैंने भी सामान तैयार कर लिया। हम सब जंगल दस बजे निकल पड़े। रास्ते में मेरी सहेली वर्षा की चप्पल टूट गई और उसके पैर में काँटा चुभ गया, और उसके पैर में से खून निकल आया। मैं और मेरी सहेलियों ने उसके पैर में पट्टी कर दी तब उसका खून बन्द हो गया। तब हम सब सहेलियाँ धीरे–धीरे चलते रहे क्योंकि वर्षा को चलते नहीं बन रहा था। एक घोड़ा खड़ा था। हमने उसे पकड़ लिया। और मीना और वर्षा को बैठा दिया। घोड़े की पीठ पर वर्षा ने एक लकड़ी मारी तो घोड़ा दौड़ने लगा। वर्षा और मीना को नदी में पटक दिया। वर्षा बोली हमें तो घर जाना है तुम लोग ही जंगल जाओ। हमने मीना और वर्षा को समझाकर कहा, अब तुम हमारे साथ चलो। तो वो दोनों मान गईं। सीमा ने कहा हम साइकिल से चलते हैं। मैंने कहा अब तेरी खोपड़ी में ये आइडिया आया है पहले नहीं आया था। रंजीत ने कहा चलो अपन सब लोग बेर खाने चलें। वर्षा ने कहा मेरे पैर में काँटा चुभ गया है और तुझे बेर खाने की पड़ी है। इस बात पे सब लोग हँस पड़े।

सब लड़कियाँ एक पेड़ के नीचे बैठकर खाना खाने की तैयारी करने लगीं। पिंकी को तो भूख लगी थी। इस पर मीना और सीमा ने कहा, तुझे ही भूख लगी है हमें नहीं लगी। वर्षा, सीमा, मीना और पिंकी ने खाना निकाला और पानी लेने के लिए सीमा को भेज दिया। वर्षा गुलाब जामुन, मीना नमकीन, पिंकी रसगुल्ले और सीमा गुलाब जामुन और नमकीन लाई थी। हम सब सहेलियों ने मिलकर गुलाब जामुन, रसगुल्ले और नमकीन खाया। सबने कहा वाह वाह... मज़ा आ गया। वर्षा, सीमा और मीना ने डाँस किया। उसमें से फर्स्ट मीना आई। इस जंगल की यात्रा में वर्षा को बहुत कठिनाई हुई।

पिंकी मालाकार, आठवीं, होशंगाबाद, म.प्र.



चल मेरे पहिये

कविता सुरेश

इस बार तय हुआ कि पहिये के बारे में चकमक में लिखा जाए। फिर शुरू हुई खोजबीन कि पहिये से सम्बंधित जानकारी कहाँ-कहाँ मिल सकती है।

उसी रात मैंने एक सपना देखा। मैं एक गाड़ी पर बैठी हूँ। और गाड़ी चल रही है। आगे नहीं पीछे की तरफ। मैं घबरा जाती हूँ। आसपास देखती हूँ कि कोई मदद करने वाला दिख जाए। पर वहाँ दूर-दूर तक कोई नहीं है। गाड़ी पीछे-पीछे चलती जा रही है। मैंने हड़बड़ाकर और मिन्नत करते हुए कहा - ''ओ भैया पहिये, रुक जा। कहाँ चला जा रहा है।''

''पहियों के बारे में जानकारी चाहिए तो पीछे ही जाना पड़ेगा।'' यह क्या? गाड़ी का एक पहिया बोलने लगा? हाँ, यह पहिया ही था जो बोला।

अरे, वाह यह तो गज़ब हो गया! मेरी

यह शैल चित्र आज से लगभग तीन हजार साल पुराना है। यह चित्र म. प्र. के मंदसौर जिले के भानपुरा में पाया गया है।



घबराहट कुछ कम हो गई। मैंने पहिये से पूछा, ''कितना पीछे जाना पड़ेगा?''

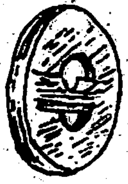
''जब पहिए जैसी किसी चीज़ की कल्पना की गई होगी। और, पहिये जैसी अन्य चीज़ों को बनाने की प्रक्रिया चल रही होगी। वहाँ तक तो चलना ही चाहिए।''

मैंने लम्बी ठण्डी साँस भरी। दरअसल गाड़ी में बैठे हुए, पीछे की ओर चलते जाने का डर अभी ख़त्म नहीं हुआ था। और यह पहिये महाशय कह रहे हैं कि अभी बहुत दूर जाना है। मुझे अचानक ख़्याल आया। मैंने कहा, ''मैं गाड़ी से उतर जाती हूँ और पैदल चलती हूँ तुम्हारे साथ-साथ।''

''क्यों घबरा रही हो, अब थोड़ी ही दूर का रास्ता बचा है। फिर तो पैदल ही चलना पड़ेगा''

और, सचमुच थोड़ी देर में गाड़ी रुक गई। मैं गाड़ी से उतरी और पैदल चलने लगी। थोड़ी दूर जाकर मैंने मुड़कर देखा, ''अरे, तुम साथ नहीं





चलोगे?" मैंने पहिये से पूछा।

"नहीं" उसने वहीं से चिल्लाकर जवाब दिया। "तुम जाओ मैं यहीं रुका हूँ।"

मैं चल दी। कुछ दूर और चलने पर मुझे एक 'घर' जैसा दिखाई दिया। घर जैसा इसलिए कि वो ऐसा घर नहीं था जिनमें हम आजकल रहते हैं। वहाँ एक आदमी बैठा कुछ काम कर रहा था। मैं अभी सोच ही रही थी कि, क्या करूँ....क्या करूँ.....

"आओ आओ।" उस आदमी ने आवाज़ देकर मुझे बुलाया।



"तुम पहिये के बारे में जानना चाहती हो ना! मैं तुम्हें बताता हूँ हम पहिया कैसे बनाते हैं। हम लकड़ी के पहिए बनाते हैं। उसके लिए लकड़ी के टुकड़ों को ऐसे जोड़ते हैं...."

"पर मैं तो शुरू से जानना चाहती हूँ।" मैंने उस आदमी को बीच में टोकते हुए कहा।

उसने घूरकर मुझे देखा। फिर धीरे से सिर हिलाया और कहा, "अच्छा, चलो मेरे साथ।"

मैं उस आदमी के पीछे-पीछे चलने लगी। उसने चलते-चलते ही बताना शुरू किया।

"पहिया कैसे बना यह जानने के लिए मनुष्य का बिल्कुल शुरू का इतिहास जानना होगा। मनुष्य ने सबसे पहले अपने काम के लिए जानवरों को पालतू बनाना सीखा। कुत्ता मनुष्य का सबसे पहला पालतू साथी बना होगा। वह शिकार में उसकी मदद करता था। फिर मनुष्य ने कुत्तों से खींची जाने वाली गाड़ी बनाई। लकड़ियों के पट्टों को मिलाकर एक बड़ा सा पटिया बनाया और उसे कुत्तों से खिंचवाया। यह थी स्लेज गाड़ी।"

"स्लेज से सामान यहाँ से वहाँ ले जाना आसान हो गया। कई बार मनुष्य खुद भी उस पर बैठ जाता था। संसार के जिन इलाकों में बर्फ़ होती थी वहाँ तो स्लेज गाड़ी का इस्तेमाल होता ही। जहाँ बर्फ़ नहीं होती वहाँ भी घसीटने वाली गाड़ी का ही उपयोग किया जाता था।"

"तो मनुष्य की पहली सवारी गाड़ी थी - स्लेज गाड़ी।"

"हाँ, हो सकता है किसी ने स्लेज के नीचे दो गोल लकड़ियाँ या पत्थर रखकर देखा हो कि क्या इसे आसानी से चलाया जा सकता है?"

मुझे याद आया एक कारखाने में भारी सामान को इधर-उधर ले जाने के लिए मैंने ऐसा ही तरीका काम में लाते हुए देखा था। दो गोल लकड़ी के लट्ठों पर बोझ को रखा जाता। और फिर उसे उनके ऊपर आगे की तरफ सरकाया जाता। बोझ आगे खिसक जाता, लट्ठा पीछे रह जाता। पीछे छूट गए लट्ठे को उठाकर आगे रख दिया जाता। यह क्रम चलता रहता और इस तरह भारी से भारी सामान को आगे ले जाया जाता।

पहिये के अविष्कार के पहले इन्सान ने भी इसी तरह सामान को लाने ले जाने का तरीका अपनाया होगा। मैंने सोचा।

"लेकिन सबसे पहला पहिया किसने बनाया

होगा? उसका नाम क्या था? क्या आप जानते हैं उसका नाम?'' मैंने पूछा।

वह आदमी थोड़ा गुस्सा हो गया। ''इसका क्या मतलब है। यह किसी एक आदमी की बनाई चीज़ नहीं है। कई लोगों ने इसे बनाने में मदद दी है।''

''मेरा मतलब है........''

''कितने ही जोड़-तोड़ किए गए होंगे तब बन पाया होगा यह पहिया। और वो भी कितने लम्बे अर्से तक यह सब किया गया होगा। तुम सोचो उस ज़माने के बारे में जब पहिया नहीं था। तब कितने ही लोग लगे होंगे ऐसी कोई चीज़ बनाने में जिससे गति को थोड़ा बढ़ाया जा सके। एक ही समय में कई अलग-अलग जगहों पर, कई लोग इसे बनाने में जुटे रहे होंगे। फिर कैसे कहा जा सकता है कि किसने पहले बनाया।''

''जी हाँ, सबसे शुरु के पहिये असीरिया, बेबीलोन और मिस्र आदि कई जगहों पर मिले हैं। इससे यही पता चलता है कि कई जगहों पर पहिया लगभग एक साथ ही बना होगा।''

वो आदमी चुप हो गया। थोड़ी ही दूर पर एक बस्ती दिख रही थी। हम एक घर के सामने रुके। इस घर का 'दरवाज़ा' कुछ अजीब सा था। एक औरत घर से बाहर आई। मैं उसे नमस्ते करने ही जा रही थी कि उसने आगे बढ़कर मुझे अपने गले से लगा लिया। मुझे बहुत अच्छा लगा। ख़ासतौर पर यह सोचकर कि इतनी देर से मैं एक गुस्सैल आदमी के साथ थी।

मैंने उस औरत की तरफ ध्यान से देखा, ''मैं तुम्हें 'मौसी' कहूँ।''

उसने मुस्कुराकर सिर हिलाया। मौसी हमें घर के पीछे वाले हिस्से की तरफ ले गई। वहाँ एक आदमी रस्सी-कमानी से घुमाई जाने वाले लकड़ी के औज़ार से पत्थर में छेद बना रहा था।



''यह रस्सी-कमानी एक ही दिशा में गति नहीं करती, बल्कि जब कमानी की रस्सी एक ओर अपने सिरे पर पहुँच जाती है तो यह उल्टी दिशा में घूमने लगती है।''

''मतलब यह कि अब तक पूरी गोलाई में घूमने वाली चीज़ नहीं बनी?'' मैंने पूछा।

''हाँ, बिल्कुल ठीक। अब आओ एक चीज़ और दिखाऊँ।'' मौसी ने कहा और फिर उसी दरवाज़े के पास ले गई। ''यह कीलक किवाड़ है। देखो यह कैसे घूमता है।'' मौसी ने उस किवाड़ को अन्दर-बाहर खोलकर दिखाया।

यह किवाड़ चौखट में ऊपर नीचे बने छेदों में खूँटियों पर घूम रहा था। मैंने सोचा, जब खूँटियों पर किसी चीज़ को घुमाना सम्भव हो गया तो पहिया बहुत दूर नहीं है।

''कुछ समझ आया।'' मौसी ने मेरे मन की बात ताड़ ली। ''अब चलो तुम्हें दिखाती हूँ कि पहले कुम्हार का चाक कैसा होता था।''



यह पत्थर का एक वृत्ताकार पटिया था जिसके नीचे एक गोलाकार कीली थी। कीली एक दूसरे कटोरेनुमा पत्थर के अन्दर खड़ी की गई थी। कीली को



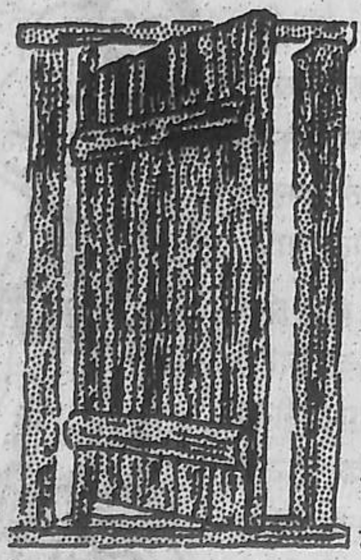
चिकना रखने पर और ऊपर के पहिये को सन्तुलित करने के बाद चाक बहुत आसानी से घूमता था।

''यह कुम्हार का चाक धुरी पर घूमने वाला पहिया ही तो है।'' मैंने उत्साह से मौसी की तरफ देखा।

''नहीं, यह पहिया नहीं। हाँ इसके बाद पहिया बनने में ज़्यादा देर नहीं लगी।'' मौसी ने कहा।

वह आदमी जो मुझे अपने साथ यहाँ तक लाया था अब तक चुप ही था। मौसी ने उसकी तरफ देखा और बोलीं, ''पहिये के बारे में और ज़्यादा बातें तुम्हें कारु ही बताएगा।'' कारु उस आदमी का नाम था जो मुझे यहाँ तक लाया था।

मौसी आगे बोलीं, ''आदमी को जब जिस चीज़ की ज़रूरत हुई उसने अपनी बुद्धि और अपनी मेहनत से उसे बनाने का प्रयास किया। हर चीज़ जो मनुष्य ने बनाई उसे उसने प्रकृति में कहीं न कहीं देखा ज़रूर है। जैसे इस पहिये की ही बात लो। तुमने वो चिलबिल के बीज देखे हैं? वही जो पेड़ से ढेर के ढेर नीचे गिरते हैं और सूख जाते हैं। और जब हवा चलती है तो गोल-गोल लुढ़कते हुए कहीं से कहीं पहुँच जाते हैं।''



''हाँ, मौसी यह तो सही है।'' मैंने मौसी की हाँ में हाँ मिलाई। मैं सोचने लगी कि और कौन-कौन-सी चीज़ें हैं प्रकृति में, जिनसे पहिये के बारे में सोचने में मदद मिली होगी।

मौसी से विदा लेकर मैं कारु के साथ वापस चल पड़ी। रास्ते में कारु ने बताना शुरू किया, जैसे उसे अब बोलने की अनुमति मिली हो। ''तुमने अभी जो चाक देखा उससे पहिया बनाने के लिए करना यह था कि इसे खड़ा कर दिया जाए। और उसके बीचोंबीच एक छेद बनाकर घुमाने का इंतज़ाम किया जाए। इसके लिए एक ऐसे उपकरण की ज़रूरत है जो पहिये को धुरी पर अपनी जगह बनाए रखे।''

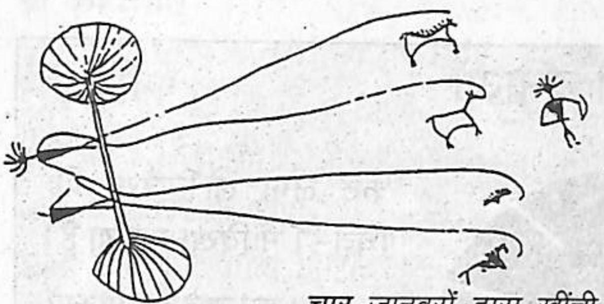
''तो इसके लिए क्या किया गया।'' मैंने पूछा।

''पता नहीं क्या-क्या किया गया होगा। पर हाँ सबसे बेहतर उपाय जो किया गया वो यह था। इसके लिए लकड़ी की खूँटियों को धुरी में छेद करके लगा दिया गया। ऐसा करने से ये खूँटियाँ धुरी पर से पहिये को खिसकने से रोक सकीं।''

''सबसे पहले जो पहिये बने वो लकड़ी के बने। पर इतनी बड़ी और मोटी लकड़ियाँ मिलना तो मुश्किल है जिनसे एक पूरा पहिया बनाया जा सके। इसलिए हम लकड़ी के तीन टुकड़ों को कीलों से जोड़कर एक बड़ा वृत (गोला) बनाते हैं।''

मैंने चौंककर देखा, ''अरे, यह क्या हम वापस तुम्हारे घर पहुँच गए? मुझे तो पता ही नहीं चला।''

''हाँ, पता नहीं चला लेकिन काफी देर हो गई। अब तुम भी वापस लौट जाओ।'' उस आदमी ने कहा और अपने 'घर' के अन्दर चला गया।



चार जानवरों द्वारा खींची जा रही गाड़ी का यह शैल चित्र आज से लगभग तीन हज़ार साल पुराना है। यह चित्र म. प्र. के सीहोर ज़िले की फिरंगी नाम की जगह पर पाया गया है।

मैं वापस चल दी वहीं जहाँ गाड़ी को छोड़कर आई थी। मैं सोच रही थी- मनुष्य ने कितनी ही तरह के औज़ार बनाए। और, जाने कब से औज़ारों का इस्तेमाल कर रहा है। लेकिन पहिया कितनी अद्भुत चीज़ है। इन्सान के लिए एक ज़रूरी उपकरण।

मैं अपनी ही धुन में चली जा रही थी कि रास्ते में मुझे एक और आदमी एक गाड़ी पर सवारी करता मिला। गाड़ी कैसी थी पता है? दो मोटे-मोटे लकड़ी के पहिये। उनके बीच में छेद करके एक-एक लकड़ी आर-पार निकली हुई थी। और उन लकड़ियों पर दो लकड़ियाँ दोनों तरफ करके बाँधी हुई थीं।

इन दो खड़ी लकड़ियों पर एक लकड़ी का पटिया कीलों से ठोक दिया गया था। बस हो गई गाड़ी। तो इस गाड़ी पर बैठा था वो आदमी। मैंने खुश होते हुए कहा, "अरे वाह, यह तो बहुत अच्छी गाड़ी है।"

उसने मुझसे कहा, "तुम्हें पता है इस गाड़ी में बैठकर कहीं आना-जाना कितना आसान है। मेरे बाबा कहते हैं कि पहिया जितना बड़ा होगा बोझा ढोने में उतना ही कम ज़ोर लगेगा। मेरी गाड़ी के पहिए बहुत बड़े-बड़े हैं। तुम भी बैठ सकती हो मेरी इस गाड़ी पर।"



मैंने उस आदमी से कहा, "धन्यवाद, मेरी गाड़ी यहीं थोड़ी दूर पर है।"

थोड़ी देर में मैं 'अपनी' गाड़ी तक वापस पहुँच गई। पहिये के पास बैठकर मैंने पूछा, "अब चलें, आगे चलोगे न?"

"हाँ, क्यों नहीं, बैठो।" पहिया बोला। और चल पड़ी हमारी गाड़ी। इस बार पीछे नहीं आगे की तरफ।

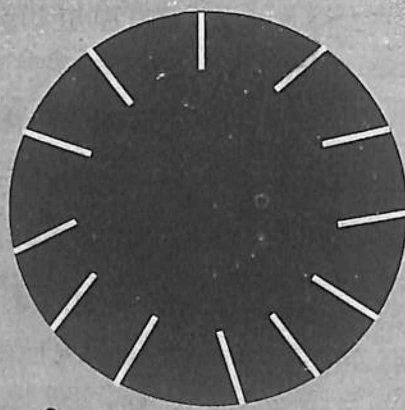
"तुमने अभी-अभी जो दो पहियों वाली गाड़ी देखी, सबसे पहले पहियों का इस्तेमाल ऐसी ही गाड़ियों में किया गया। इसके बाद दो से ज़्यादा (चार या छह) पहिये लगाकर बड़ी गाड़ियाँ बनाई गईं। इन गाड़ियों को घोड़े या अन्य दूसरे जानवर खींचते थे। इस तरह



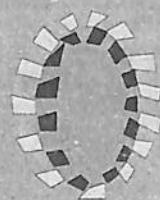
अपना पहिया बनाओ

पहिये के बारे में तुमने इतना सब पढ़ा। इसके खेलों के बारे में शायद तुममें से कुछ लोग जानते होंगे। हम बचपन में काग़ज़ का पहिया बनाकर उससे खेला करते थे। तुम्हें भी बताते हैं –

काग़ज़ से (मोटा या पतला दोनों चलेंगे) एक गोला काटो। इस गोले पर किनारे से अन्दर की तरफ कट लगा लो। जैसा कि चित्र–1 में दिखाया गया है।



चित्र–1



चित्र–2

अब इन कटे हुए हिस्सों को बारी-बारी से दाएँ-बाएँ तरफ मोड़ लो। चित्र–2

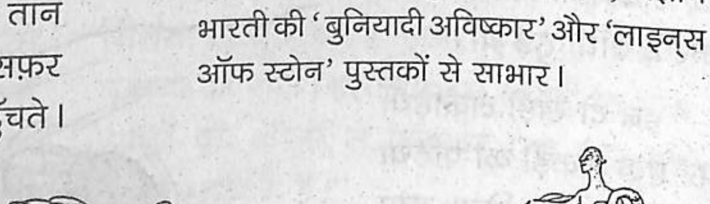
पहिया तैयार। यह पहिया हवा से चलेगा। पर इसमें हवा भरने की ज़रुरत नहीं है। इसे सड़क पर छोड़ दो, जब हवा चलेगी तो पहिया भी चलेगा।

गाड़ियों की रफ़्तार बढ़ गई।" पहिया बोलता रहा। गाड़ी चलती रही। खड़-खड़, खड़-खड़.....।

जब मेरी नींद खुली तब भी मेरे कानों में खड़-खड़, खड़-खड़ की आवाज़ गूँज रही थी। मैं सोच रही थी उस शुरुआती पहिये और आज के पहियों में कितना फ़र्क है। स्पोकवाले या तान वाले पहिये, रबर के पहिये कितना लम्बा सफ़र तय किया है पहिये ने हम तक पहुँचते-पहुँचते।

मनुष्य के पूरे इतिहास में कोई भी एक ऐसा अकेला आविष्कार नहीं है जिसने दूरी पर विजय पाने के लिए मनुष्य की इतनी ज़्यादा मदद की हो। यह पहिया ही है जिसकी बदौलत पहले जो स्थान बहुत दूर मालूम होते थे वे अब बिलकुल पास लगते हैं। जिन यात्राओं में किसी समय कई-कई महीने और यहाँ तक कि कई-कई साल लग जाते थे, वे अब कुछ ही दिनों में पूरी हो जाती हैं। पहिये का आविष्कार किसने किया था, यह कोई नहीं जानता। वो जो भी लोग थे, हम उन्हें सलाम करते हैं।

इस लेख में आए चित्र - नेशनल बुक ट्रस्ट की 'अविष्कार जिन्होंने दुनिया बदल दी', विज्ञान भारती की 'बुनियादी अविष्कार' और 'लाइन्स ऑफ स्टोन' पुस्तकों से साभार।

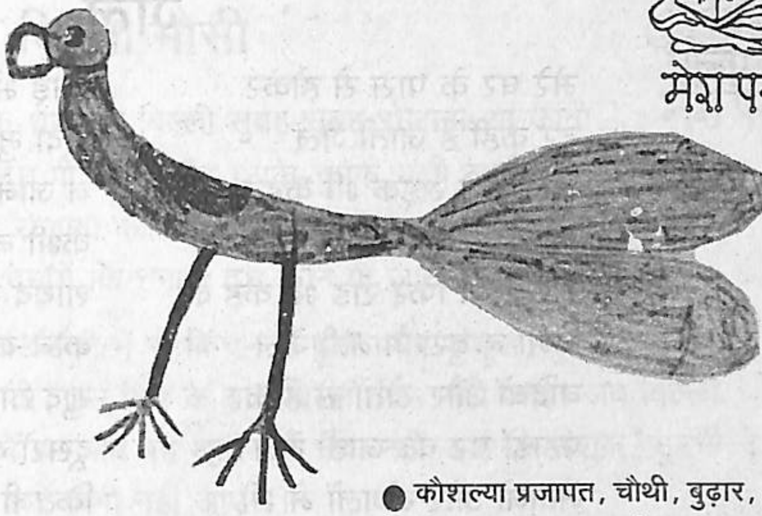


गाड़ी की यह मूर्ति आज से तीन हज़ार साल पुरानी है। यह मूर्ति दाइमाबाद, अहमदनगर, महाराष्ट्र में मिली है।

दो कविताएँ

पेड़ पौधे

मेरे गाँव में पहले,
कई थे आम के बाग,
इन्हें काटकर जला दिए,
बना दी उनकी राख।
इन्हें काटकर इन्सान,
आँसू ही बहाएगा,
सब पेड़ कट जाएँगे,
सूनापन हो जाएगा।
प्रकृति माता के बेटे
पेड़ पौधे ही होते।
जिस दिन ये कट जाएँगे,
हम रहेंगे रोते।
मेरे गाँव के इन्सान,
पेड़ काटने में
न करते कभी देरी।
मैं अगर चिल्लाता रहूँ,
मत काटो इनको भैय्या,
तो कौन सुनेगा मेरी।



● कौशल्या प्रजापत, चौथी, बुढ़ार, शहडोल, म.प्र.

बुखार

बुखार की करामात,
सबने देखी होगी,
जिसको यह आता,
वह बिस्तर का रोगी,
चढ़ा अगर ज़्यादा,
तो बेहोश हो जाते,
होश अगर आया तो,
हास्पिटल में पाते।
होता बड़ा खराब,
मानव का बुखार,
जिसको यह आता,
डरता सपने में कई बार।
गुदड़ी ओढ़कर बैठे,
कड़कड़ाते दाँत,
हाय अम्मा, हाय बुआ,
ये बुखार की करामात,

● दोनों कविताएँ : विनोद कुमार, बारहवीं, नान्देड़, म.प्र.



● हेमेन्द्र शर्मा, उज्जैन, म.प्र.



गैल

मेरे घर के पास से होकर
दूर कहीं है जाती गैल
लोग इसे सड़क भी कहते
और राह भी कहलाती गैल।
रास्ता या फिर रोड भी कह दें
कभी न बुरा मानती गैल
नदियों और खेतों से होकर
पहाड़ों पर चढ़ जाती गैल।
मैदानों और जंगलों में भी
कभी नहीं घबराती गैल
कोई भी इसके ऊपर चलदे
सदा मुस्काती रहती गैल
न जाने यह कितनी लम्बी
कभी नहीं बतलाती गैल।
शायद सारी ही दुनिया के
कोने-कोने में घूम आती गैल
खुद तो एक जगह पर रहती
दूसरों को ही चलाती गैल।
कितनी अच्छी कितनी प्यारी
मुझको है यह भाती गैल।

● **दिलजीत सिंह सिख, गढ़ी बारौद, शिवपुरी, म.प्र.**



● **देवेश नाग, उज्जैन, म. प्र.**



बिल्ली मौसी

सुरभी, अंशुल छोटे-छोटे भैया-बहिन के घर एक बिल्ली सुबह-सुबह रोजाना आ जाती और सुरभी अंशुल के लिए रखा हुआ दूध पी जाती और चुपके-चुपके चली जाती। दोनों भाई बहन को मालूम भी नहीं होता कि हमारा दूध रोजाना कौन पी जाता। दोनों ने सोचा कल हम चुपचाप जल्दी आकर छिपकर बैठ जाएँगे और देखेंगे कि हमारा दूध कौन पी जाता है।

आज ही बिल्ली चुपचाप आई और खिड़की में से किचन में घुसी और अंशुल, सुरभी ने जो डंडे बरसाए तो बिल्ली कि टाँग लँगड़ी कर दी। उस दिन के बाद बिल्ली फिर नहीं आई। जब बिल्ली दूध पीने आती थी तो उसके पेट में बच्चे थे। जब वह आठ दिन तक नहीं आई तो अंशुल, सुरभी ने सोचा खूब मार लगाई तो बिल्ली मौसी अब कभी नहीं आएगी।

आठ दिन बाद जब बिल्ली मौसी आई तो उसके साथ दो छोटे-छोटे प्यारे-प्यारे बच्चे भी थे। किन्तु आज बिल्ली ने दूध भी नहीं पिया। चुपचाप दरवाजे के वहाँ आकर बैठ गई। जब अंशुल, सुरभी को देखा तो मियाऊँ...मियाऊँ बोलने लगी। बच्चे भी धीरे-धीरे मियाऊँ-मियाऊँ बोलने लगे। आज अंशुल, सुरभी को बहुत अच्छा लग रहा था। उन्होंने सोचा अपने हिस्से का थोड़ा-थोड़ा दूध दोनों बच्चों को भी पिलाएँगे। और इन्होंने बिल्ली मौसी को बोला कि दोनों बच्चों को हमारे पास छोड़ जाओ हम इनके साथ खेलेंगे।

अब हो गई दोस्ती बिल्ली मौसी से। वह रोज़ाना आती और उन बच्चों को अंशुल सुरभी के पास छोड़ जाती। चारों दिन भर खूब खेलते और शाम को बिल्ली मौसी आती और बच्चों को ले जाती। खूब मस्ती से कटने लगे दिन अंशुल, सुरभी के मौसी के बच्चों के साथ।

● रवि फरक्या, उज्जैन, म. प्र.



● प्रियंक शर्मा, सातवीं, उज्जैन, म. प्र.



झूला झूला

एक बार मेरे मित्र सुरेश ने मुझसे कहा, कि चलो हम लोग एक झूला बाँधें। मैंने कहा, चलो, पर झूला बाँधने के लिए रस्सी चाहिए। तो सुरेश बोला कि मेरे घर एक पानी भरने की रस्सी है हम उससे झूला बाँधेंगे। रस्सी लाकर हमने झूला बाँधा।

पहले मैं बैठ गया और सुरेश झूला झुलाने लगा। फिर बाद में सुरेश बैठ गया और मैं झूला झुलाने लगा। झूला झुलाते हुए मुझे मजाक सूझा। मैंने ज़ोर से झूला झुला दिया। जिससे सुरेश झूले से नीचे गिर पड़ा। उसके पैर में चोट आ गई और खून निकलने लगा। हम उसे डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने पट्टी बाँध दी। उस दिन से हम लोगों ने समझौता किया कि बराबरी से काम करेंगे और किसी का बुरा नहीं करेंगे।

● अजय जैन, मढ़देवरा, छतरपुर, म.प्र.



● स्नेहलता (उम्र एवं पता नहीं लिखा)

प्रतिज्ञा

मैंने एक दिन अपने दोस्तों के कहने पर एक बगीचे में चोरी करके बहुत से फूल तोड़े और जाने लगा। तभी माली आया उसने मुझे भागते हुए पहचान लिया और पापा से कह दिया। मैं घर ये सोच के गया कि आज तो पापा पिटाई करेंगे। पर पापा ने मुझे प्यार से समझाया कि बेटा फूल तोड़ना गन्दी बात है। फूल पेड़ पर अच्छे लगते हैं तुम्हारे हाथ में नहीं। मैंने पापा के ऐसे व्यवहार को देखकर अपनी गलती मान ली और प्रतिज्ञा की, कि मैंने जितने फूल तोड़े हैं उतने ही फूल के पौधे लगाऊँगा। आज मेरे घर के बाहर एक हरी-भरी क्यारी है। जिसमें से मैं अपने दोस्तों के जन्मदिन पर एक पौधा देता हूँ और मुझे बहुत खुशी होती है।

● प्रेमप्रसाद त्यागी, छठवीं, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

रक्तदान

तुमने अख़बारों में रक्तदान शिविरों के बारे में पढ़ा होगा। खून के कई ग्रुप होते हैं – ए, बी, एबी, ओ आदि, यह भी तुम जानते होगे। क्या तुम्हें मालूम है कि जब किसी को खून की ज़रूरत होती है तो ऐसा नहीं हो सकता कि किसी का भी खून दे दो। इसके लिए यह देखना पड़ता है कि दान करने वाले का खून पाने वाले के खून के ग्रुप से मिलता है कि नहीं।

मोटे तौर पर इन्सानों का खून चार मुख्य ग्रुपों में बाँटा जा सकता है– ए (A) बी (B) एबी (AB) और ओ (o)। कुछ ग्रुप के खून आपस में मिलने पर सुरक्षित तरीके से मिल सकते हैं और कुछ के थक्के जम जाते हैं। यहाँ इस चार्ट में तुम देख सकते हो कि कौन से ग्रुप आपस में मिलाए जा सकते हैं और कौन से नहीं।

जो ग्रुप आपस में नहीं मिल सकते हैं, चार्ट में जहाँ वो मिलते हैं वहाँ ◯ बना है। जिन ग्रुपों के मिलने पर थक्के जम जाते हैं उनके मिलने वाले चौखाने में ◍ बना है। इससे तुम्हें चार्ट देखते से ही पता चल जाएगा कि कौन से ग्रुप वाला रक्तदाता किस ग्रुप वाले मरीज़ को खून दे सकता है।

अगर तुम इस जनकारी को और पुख्ता करना चाहो तो इस पर हम एक मज़ेदार खेल खेल सकते हैं। इसके लिए तुम पोस्टकार्ड पर कागज़ चिपकाकर लगभग 3 इंच × 2 इंच नाप के 30–40 पत्ते बना लो। इनमें से एक चौथाई पर 'ए', एक चौथाई पर 'बी', एक चौथाई पर 'एबी' और बाकी बचे एक चौथाई पर 'ओ' लिख लो।

अब खेल शुरू करते हैं। तुम अपने किसी दोस्त को बुला लो। और फिर सारे पत्तों को अच्छी तरह से फेंटकर एक-एक करके आपस में बाँटना।

पत्ते बाँटते हुए यह ध्यान रखना कि लिखी हुई सतह नीचे की ओर हो। न तुम्हें यह दिखाई दे कि तुम्हारे या तुम्हारे दोस्त के पत्तों पर क्या लिखा है, न उसे।

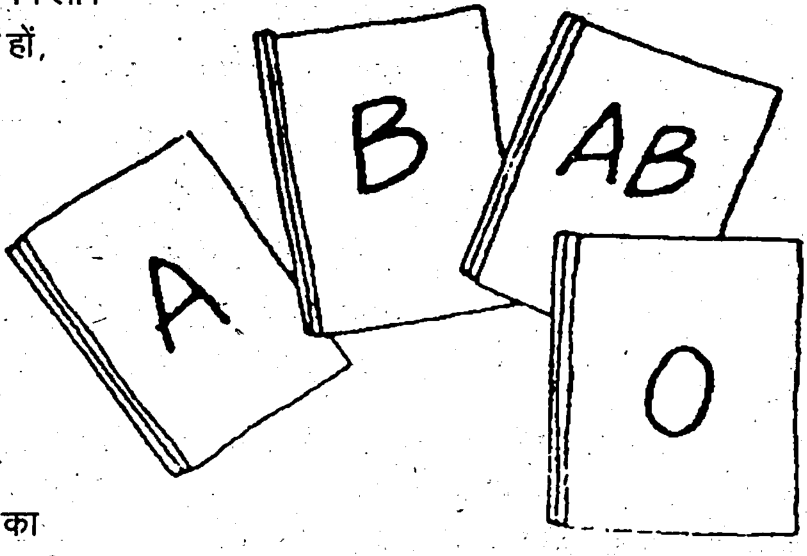
फिर तुम दोनों को एक-एक करके पत्ते खोलते हुए सामने डालने हैं। जैसे ही दूसरा पत्ता गिरा, दोनों में से एक को बोलना है कि उस पर लिखे ब्लड ग्रुप आपस में मिल सकते हैं या नहीं।

खून का ग्रुप		रक्त दाता			
		A	B	AB	O
मरीज़	A	◯	◍	◍	◯
	B	◍	◯	◍	◯
	AB	◯	◯	◯	◯
	O	◍	◍	◍	◯

◍ थक्के जमना

◯ सुरक्षित तरीके से खून का मिलना

जो यह पहले बता दे, दोनों पत्ते उसी के हो जाएँगे। अन्त तक इसी तरह से खेलते हुए, जिसके हाथ में सारे पत्ते आ जाएँ, वह जीता। या कभी अगर तुम बीच खेल में ही हार-जीत का फैसला करना चाहो तो दोनों अपने-अपने पत्ते गिन लो। जिसके पास ज़्यादा पत्तें हों, वही सिकन्दर!!



एक और बात का ख्याल रखना होगा तुम्हें। वह यह कि पत्ते डालते हुए हर बार पहले पत्ते पर लिखे ग्रुप को मरीज़ का खून और दूसरे को खूनदाता का खून मानना होगा। वर्ना तुम 'बी' और 'एबी' जैसे ग्रुप वाले पत्ते एक के ऊपर एक आने पर क्या करोगे?

इन्हीं पत्तों से एक और खेल खेला जा सकता है। एक ऐसा खेल जिसमें तुम सिर्फ 2 दोस्त ही नहीं, ज़्यादा लोग भी खेल सकते हो।

पत्ते पहले की तरह ही आपस में बाँट लो। फिर एक-एक करके वैसे ही पत्ते डालते जाओ। लेकिन इस बार अगर घुलने-मिलने वाले ग्रुप वाले पत्ते एक के ऊपर एक आएँ तो कुछ नहीं कहना है। बस चुपचाप पत्ते डालते जाना है, बारी बारी से। लेकिन जैसे ही दो ऐसे खून के ग्रुप वाले पत्ते आएँ, जिनके मिलने पर थक्के जम जाते हैं तो जल्दी से बोलना है – "खतरा"।

जो खिलाड़ी पहले बोल दे, सारे पत्ते उसके। इस तरह से धीरे-धीरे कुछ लोगों के पास पत्ते घटते जाएँगे और कुछ औरों के बढ़ते जाएँगे। जैसे ही किसी खिलाड़ी के हाथ के पत्ते खत्म हो जाएँ, वह खेल से बाहर हो जाएगा। बाकी लोग खेल जारी रखेंगे। अन्त में जिसके पास सारे पत्ते आ जाएँ, या जिसके पास सबसे ज़्यादा पत्ते हों, उसी की जीत होगी।

शायद खून के ग्रुप वाले इन पत्तों से कई सारे ताश जैसे खेल खेले जा सकते हैं। तुम सोचना इनके बारे में और अगर कोई नया खेल सूझे तो हमें लिखकर भेजना। हम इन्तज़ार करेंगे।

चित्र व खेल 'बी. एस. ओ. हैण्डबुक फॉर सांइस टीचर' से साभार।



पानी बरसा

पानी बरसा भर गए ताल।
तालों में खुश मेढक लाल॥
नाच उठे बागों में मोर।
आए बादल सुनकर शोर॥
टर् टों टर् टों की आवाज़।
छेड़ रहे है मेंढक साज़॥
बच्चों को जो आया ताव।
तैराई कागज़ की नाव॥
निकल पड़ी छातों की रेल।
बाज़ारों में ठेलम-ठेल॥
मोटूमल का खोया ध्यान।
फिसले गिरे हुए हैरान॥
हमसे एक हो गई भूल।
पानी में दौड़े स्कूल॥
टीचर ने दी छुट्टी बोल।
हम घर आए होकर गोल॥

● रोहिताश्व अस्थाना

● चित्र : आशा रोमन







खोटे पहिये

चित्र एवं कहानी
वी. सुतेयेव

भिन-भिन मक्खी, टर्र्-टों मेंढक, चींचीं सेही, और कुकुडूँ-कूँ मुर्गा, चारों एक पेड़ की ठूँठ पर बने अपने घर में रहते थे।

एक दिन टर्र्-टों, चींचीं और कुकड़ूँ-कूँ जंगल में घूमने निकले। भिन-भिन उनके सिर पर उड़ती चल रही थी।



घूमते-घूमते वे सब पेड़ों की छायादार जगह पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने एक मज़ेदार गाड़ी देखी। उसमें चार चक्के थे, पर चारों अलग-अलग नाप के।



पहला चक्का बिल्कुल पिद्दी-सा था, दूसरा थोड़ा बड़ा, तीसरा पहले और दूसरे के बीच का, और चौथा बहुत बड़ा था।

वह गाड़ी जरुर बहुत समय से वहाँ खड़ी होगी, क्योंकि उसके नीचे कुकुरमुत्ते उग आए थे।

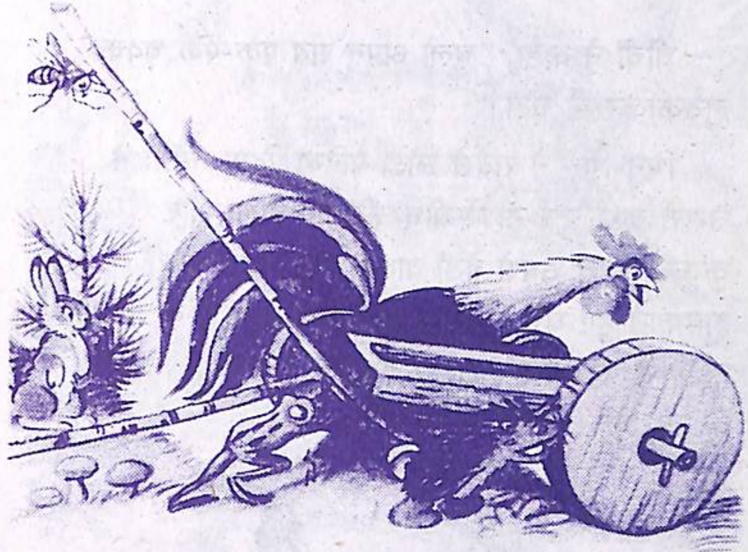
भिन-भिन, टर्र्-टों, चींचीं और कुकडूँ-कूँ उसे हैरत से देख ही रहे थे, कि तभी झाड़ी में से फुदकू खरगोश कूदकर बाहर आया और उस गाड़ी को देखने लगा। और फिर वह हँसा।

"क्या यह गाड़ी तुम्हारी है?" चारों ने उससे पूछा।

"नहीं, यह तो भालूराम की गाड़ी है। वह बहुत दिनों से इस पर काम कर रहा था, पर उसका काम कभी पूरा ही नहीं होता। इसलिए यह अब भी यहीं खड़ी है।"

"चलो अपन इसे घर ले चलते हैं", चींचीं ने कहा। "यह अपने काम आ सकती है।"

भिन-भिन, टर्र्-टों और कुकड़ूँ-कूँ ने कहा, "हाँ, ले चलो, चलो।"





फिर वे सब मिलकर उस गाड़ी को धकाने लगे। लेकिन गाड़ी अपनी जगह से टस की मस नहीं हुई, क्योंकि चारों चक्के तो अलग-अलग थे।

वह धकाते रहे, धकाते रहे, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। गाड़ी एक तरफ लुढ़क गई और उसके अस्थि-पंजर इधर-उधर बिखर गए।

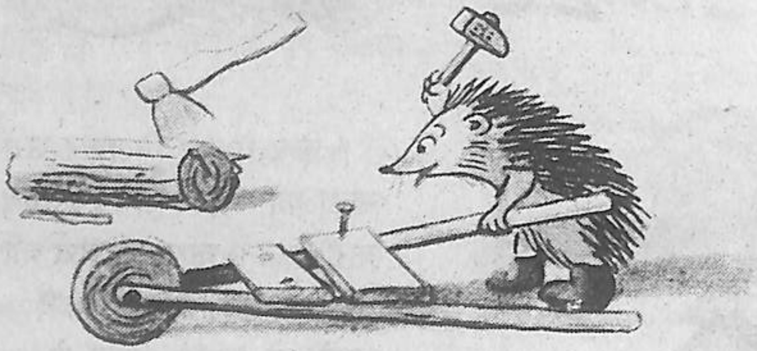
और फुदकू का तो हँसते-हँसते दम ही निकलने लगा। "ऐसी फालतू गाड़ी का क्या करोगे?" उसने पूछा।

भिन-भिन, टर्र्-टों, चींचीं और कुकड़ूँ-कूँ आख़िर उस गाड़ी को धकाते-धकाते थक गए। पर वे उसे छोड़कर जाना भी नहीं चाहते थे।



चींचीं ने कहा, ''चलो अपन सब एक-एक चक्का लुढ़काकर ले चलें।''

भिन-भिन ने सबसे छोटा पहिया लिया, चींचीं ने उससे बड़ा, टर्र्-टों ने बीच की नाप वाला और कुकुडूँ-कूँ ने सबसे बड़ा वाला। और वे सब उन्हें लुढ़काते हुए घर की ओर चल दिए। कुकडूँ-कूँ ने खुशी से पंख फड़फड़ाकर बाँग दी, ''कुकडूँ-कूँ..कूँ...कूँ......!''





फुदकू ने उनकी ओर देखा और खूब हँसा। ''अजीब लोग हैं। अलग-अलग नाप के पहिये लेकर चल दिए'', कहकर वह उचककर वापिस झाड़ी में छिप गया।

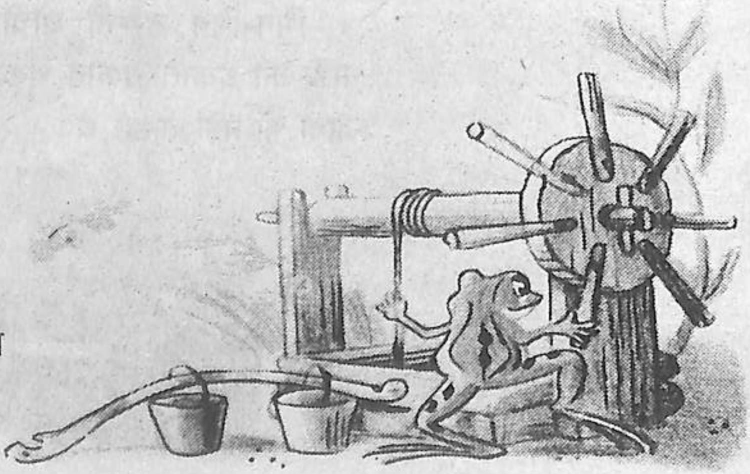
भिन-भिन, टर्र्-टों, चींचीं और कुकडूँ-कूँ अलग-अलग नाप वाले पहिए लेकर घर पहुँचे और सोचने लगे कि वो कैसे उनका इस्तेमाल कर सकते हैं।

''मुझे पता है,'' भिन-भिन ने कहा और उसने अपने चक्के से एक चरखा बना लिया।

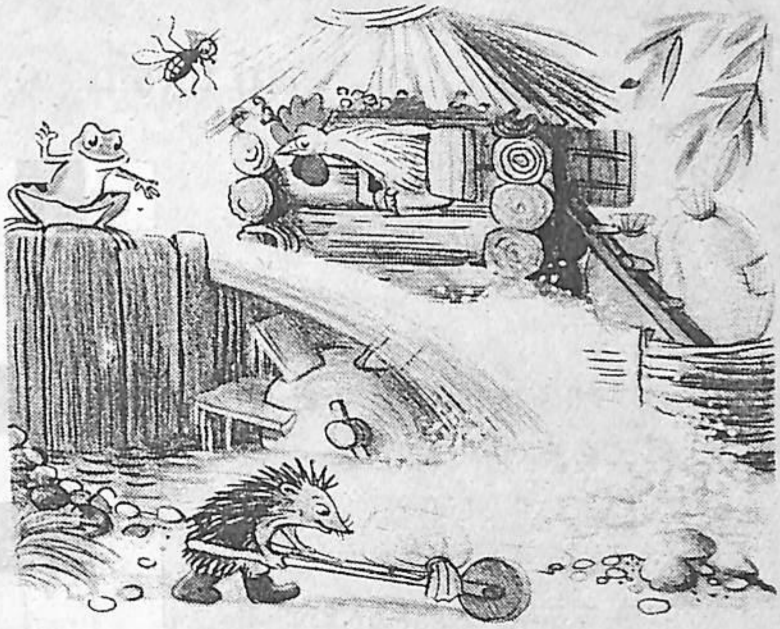
चींचीं सेही ने अपने पहिए में दो बल्लियाँ जोड़कर उसकी एक ठेलागाड़ी बना ली।

''मुझे भी एक चीज़ सूझी है'' टर्र्-टों ने कहा और उसने अपने पहिये को कुएँ के ऊपर लगा लिया। ''इससे कुएँ से पानी खींचना आसान हो जाएगा।''

कुकडूँ-कूँ ने सबसे बड़े चक्के को ले जाकर झरने में लगा दिया। उससे पनचक्की बन गई।



तो आखिरकार सारे चक्के काम आ ही गए।



भिन-भिन चरखे पर सूत कातने लगी, टर्र्-टों कुएँ से पानी लाकर बगीचे के पौधों को पानी देने लगा, चींचीं अपनी गाड़ी में जंगल से खुम्बियाँ, बेरियाँ और कन्द-मूल इकट्ठा कर लाया। और कुकुड़ूँ-कूँ पानी से चलने वाली चक्की में गेहूँ पीसने लगा।



एक दिन फुदकू इन सबसे मिलने आया। सब लोग फुदकू से मिलकर बहुत खुश हुए।

भिन-भिन ने उसके लिए अपने काते हुए सूत से दस्ताने बुन दिए।

टर्र्-टों ने अपने बगीचे से फुदकू के लिए एक सुर्ख लाल गाजर खोद निकाली।

सेही उसके लिए एक खुम्बी लेकर आई।

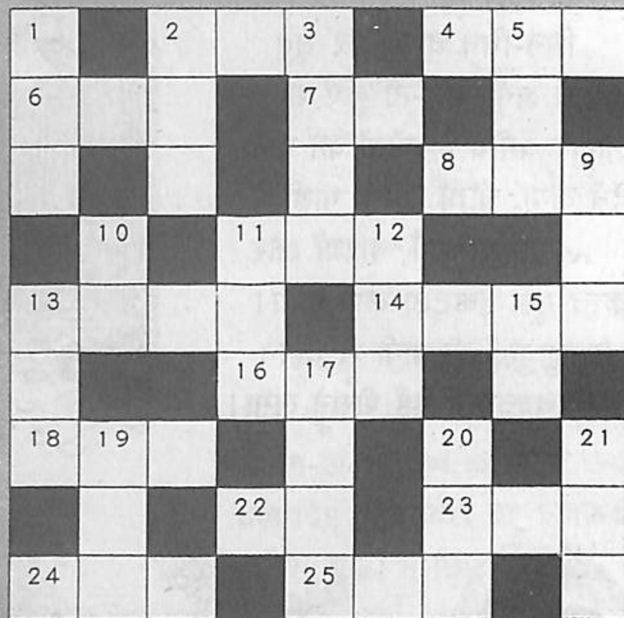
और, कुकड़ूँ-कूँ ने आटे से डबलरोटी और रवे से हलवा बनाया।

फुदकू ने कहा, ''मुझे तब हँसना नहीं चाहिए था। अब मैं समझा कि अलग-अलग पहिये भी काम आ सकते हैं, अगर लोगों को पता हो कि उनसे कैसे काम लेना हो, तो।''



'स्टोरीज़ एंड पिक्चर्स' से साभार

वर्ग पहेली - 98



संकेत: बाएँ से दाएँ

2. आसमान में उड़ने वाली बेजान चीज़ (3)
4. रूई (3)
6. कसम ताल में है बराबरी (3)
7. अजनबी में लोग (2)
8. कोई हुनर, कला या गुर (3)
11. मगज बड़ा में छिपा है कमाल (3)
13. पुराने ज़माने में राजा-महाराजाओं की स्तुति में कविता या गीत गाने वाला (4)
14. रात में चरने या घूमने वाले (4)
16. सिक्ख पंथ को चलाने वाले पहले गुरू (3)
18. कमला पता नहीं में गायब (3)
22. चार चरणों वाले छन्द (2)
23. नदी के किनारे की ज़मीन (3)
24. सूरज (3)
25. आग की ऊँची-ऊँची लौ (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. भारत के उत्तर-पूर्वी इलाके का एक राज्य (3)
2. झण्डा (3)
3. जग और जरा में खूब बड़ा हाथी (4)
5. जूते या कोई भी चीज़ घिसकर चमकाना (3)
9. पालकी रथ में रेखा है (3)
10. काँटेदार पेड़ पर फलनेवाला एक छोटा-सा फल (2)
11. किसी भी ठोस चीज़ को द्रव अवस्था में बदलना (3)
12. अब निकल में ढूँढो बनिया (3)
13. आक्रमण (3)
15. इससे बेसन बनाया जाता है (2)
17. नानी का घर या शहर (4)
19. दूध में खटाई डालने पर जो चीज़ बनती है (3)
20. छवि कटने में भयानक है (3)
21. रश्मि (3)

● हरिनारायण साहू, पिपरिया द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित।

वर्ग पहेली - 98 का हल चकमक के नवम्बर, 99 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें।

ओका-बोका

बरसात का दिन। बच्चे भला कहाँ जाएँ। गली,मैदान जहाँ देखो वहाँ बस कीचड़-कीचड़। घर में कितनी देर बैठें और क्या करें। चुपचाप बाहर देखते रहो। बारिश खुलने का इंतजार करो या फिर भींगते हुए किसी दोस्त के घर पहुँचो और लौटकर डाँट खाओ।

दक्षिण-पश्चिमी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के अंचलों में ऐसे मौसम में छोटे बच्चे गीतों भरा एक मज़ेदार खेल खेलते हैं 'ओका-बोका'। इस खेल में एक बच्चा थोड़ा बड़ा होता है। बड़ा सिर्फ इस मामले में कि उसे खेल के पूरे स्टेप याद हों। वह बोलता जाता है बाकी बच्चे उसके कहे मुताबिक चलते जाते हैं। वह खेल का संचालन करता है। उसे मास्टर भी कहा जाता है।



इस खेल को चार से लेकर आठ बच्चे एक साथ खेल सकते हैं। पहले तो बच्चों का जमावड़ा होता है। फिर वह कोई गीत गाते हुए या ताली बजाकर शोर करते हुए गोला बनाकर बैठ जाते हैं। फिर सभी बच्चे अपनी दोनों हथेलियाँ उँगलियों के सहारे ज़मीन पर टिका देते हैं। हर हथेली से एक गुम्बदनुमा आकृति बन जाती है। अब मास्टर गीत गाते हुए खेल की शुरुआत करता है –

ओका–बोका तीन तड़ोका
लौव्वा–लाठी चंदन काठी
बाग में बगौवा डोले
सावन में करैला फूले
ओ करैला के नाम का
इजवा–बीजवा, पानवा फुलवा
पचकै बे त पचका दे।

गीत गाते हुए वह सभी की हथेलियों पर अपनी एक उँगली रखता जाता है। जैसे ही अंतिम पंक्ति आती है हर खिलाड़ी सावधान हो जाता है। 'पचका दे' कहते वक्त जिसकी हथेली पर मास्टर की उँगली पड़ती है वह हथेली को ज़मीन पर फैला देता है। यानी अभी तक वह उँगली के सहारे उठी हुई थी अब वह पूरी तरह से जमीन पर फैल जाती है।

इस तरह यह खेल तब तक चलता है जब तक कि सभी की हथेलियाँ जमीन पर न फैल जाएँ। अब मास्टर किसी एक खिलाड़ी की हथेली (संभवतः सबसे पहले पिचकी हथेली को) को चुटकी से पकड़कर गोले के बीच में लाता है। फिर उसके ऊपर सबकी हथेलियाँ रखी जाती हैं। मास्टर नया गीत शुरू करता



है। इस दौरान वह सबसे ऊपर वाली हथेली पर थपकी देकर यह गीत गाता है–

ताई-ताई पुरिया, घी में चभूरिया
हम खायें कि भौजी खाय
भौजी पतरंगिया
कान धर ममोरिया

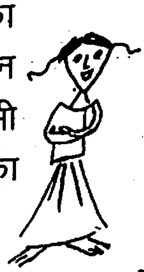
जैसे ही गीत खतम होता है मास्टर चुटकी से ऊपर वाली हथेली को उठाकर किसी एक का कान पकड़ा देता है। ऐसे ही बार-बार यह गीत दोहराते हुए एक-एक हथेली से एक-एक कान पकड़ा दिए जाते हैं। कोशिश यह होती है कि अगल-बगल के खिलाड़ी एक-दूसरे का कान पकड़ें। इस तरह से एक-दूसरे का कान पकड़ते हुए गोला बन जाता है। फिर सभी खिलाड़ी एक साथ झूमते हुए एक-दूसरे का कान पकड़कर गाते हैं –

चूँटा-हो-चूँटा
मामा ते गगरिया काहे फोड़ल हो चूँटा
मामा ले अइहें लड्डू-पेड़ा
तोहके ना देब हो चूँटा

यह झूमना काफी देर तक चलता है। कभी-कभी एक दूसरे का कान तेजी से खींच देने के कारण लड़ाई भी हो जाती है। लेकिन चूँकि अगल-बगल वाले ही एक-दूसरे का कान पकड़े होते हैं इसलिए ज्यादा मस्ती नहीं होती। सभी बड़ी नज़ाकत से एक-दूसरे का कान पकड़ते हैं।

इसके बाद खेल का अगला चक्र शुरू होता है। मास्टर अपनी मुट्ठी अच्छे से ज़मीन से जमाकर अँगूठा ऊपर कर लेता है। इस अँगूठे को घेरते हुए अन्य खिलाड़ी अपनी दोनों मुट्ठियाँ उस पर रखते जाते हैं। उनका अँगूठा भी ऊपर रहता है। उस पर दूसरी मुट्ठी। इस तरह मुट्ठियों की एक ऊँची मीनार-सी बन जाती है। फिर शुरू होता है नया गीत–

ताड़ काटो, तरकुल काटो
काटो रे बनखाजा
हाथी पर के घुघुरा चमक चले राजा
राजा के रजैया काटो
भैया के दुपट्टा
हिच्च मारो, खिच्च मारो
भारी–भरकम बेंटा



इस गीत के साथ मास्टर अपनी दूसरी हथेली सबसे ऊपर लगी मुट्ठी के नीचे घिसता रहता है मानो वह किसी ताड़ का पेड़ काट रहा हो। फिर वह गीत की अंतिम लाइन के साथ एक जोरदार वार करता है मानो किसी भारी-भरकम चीज से मार रहा हो। इस वार के साथ ही सम्बंधित खिलाड़ी अपनी मुट्ठी हटा लेता है।

फिर गीत चलता रहता है और एक-एक कर सभी मुट्ठियाँ मीनार से अलग होती जाती हैं। जिस खिलाड़ी की दोनों मुट्ठियाँ अलग हो



जाती हैं वह अपनी बाँहें बाँधकर बैठ जाता है। जब सभी खिलाड़ियों की मुट्ठियाँ अलग हो जाती हैं। सभी बाँहें बाँधकर बैठ जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि बाँहों की तालाबन्दी हो गई।

फिर शुरू होता है नया चक्र। मास्टर एक-एक खिलाड़ी की बाँह पकड़कर हिलाता है–



तालावा खुलते नइखे
चबिया मिलते नइखे
चबिया मिल गइल
तालावा खुल गइल।

मास्टर के कई बार दोहराने पर खिलाड़ी बाँहें तो खोलते जाते हैं, लेकिन मुट्ठियाँ बाँध लेते हैं। मास्टर के लिए एक नई मुसीबत होती है। उसे फिर एक-एक खिलाड़ी के पास जाना होता है। लेकिन इस बार वह कुछ चालाकी करता है। वह खिलाड़ी की मुट्ठी पर हाथ रखकर पूछता है इस मुट्ठी में क्या है? खिलाड़ी कभी किसी अच्छी चीज का नाम लेता है और कभी ऐसी चीज का जिसको खाया न जा सके। मास्टर मुट्ठी खोलकर सबको बाँटता है–

थोड़ा तुम खाओ,
थोड़ा तुम खाओ, थोड़ा तुम खाओ।

अगर खाने लायक चीज है तो सभी खाने का अभिनय करते हैं। अगर नहीं तो न खाने का, अच्छा नहीं लगने का। आख़िरकार मास्टर यह कोशिश करता है कि मुट्ठी वाले का ध्यान बँट जाए। वह कहता है –

देखो ऊपर क्या चल रहा है
देखो साँप या
देख तेरी नानी आ रही हैं। आदि
आदि।

जैसे ही खिलाड़ी का ध्यान बँटता है मास्टर उसकी मुट्ठी उसी के मुँह से लगा देता है– ले तू भी खा ले।

इस तरह से जब सभी खिलाड़ियों की बारी खतम हो जाती है। तब जोर से शोर होता है। सभी पैर फैलाकर बैठ जाते हैं और एक-दूसरे के पैर से पैर टकराने लगते हैं। इस शोर में एक शब्द दोहराया जाता है – *लाता-लुती, लाता-लुती, लाता-लुती, लाता-लुती ,लाता-लुती,लाता-लुती, लाता-लुती, लाता-लुती।*

इसके बाद सभी लोग खड़े हो जाते हैं। और खेल खत्म। लम्बे समय तक चलनेवाले इस खेल मे कई उतार-चढ़ाव और मजेदार पहलू होते हैं। इसे बच्चे अपने तरीके से और लम्बा-और लम्बा करते जाते हैं। तुम्हारे इलाके में यह खेल होता है क्या? ठीक ऐसे ही या किसी और तरीके से?

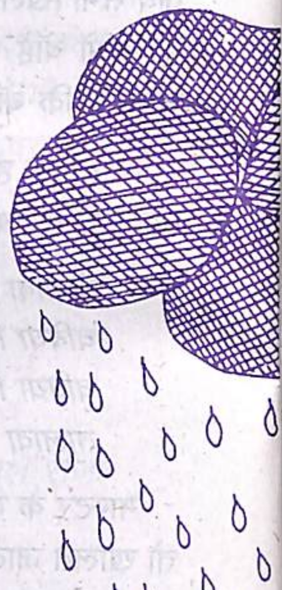
यह खेल कृतिका ओझा, सात वर्ष, बालासोर, उड़ीसा से लालबहादुर की बातचीत के आधार पर।





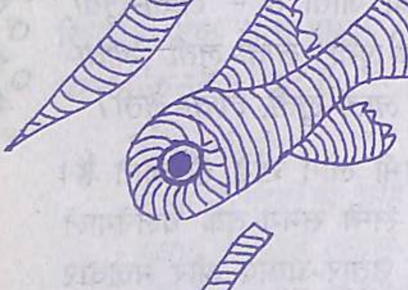
बादल

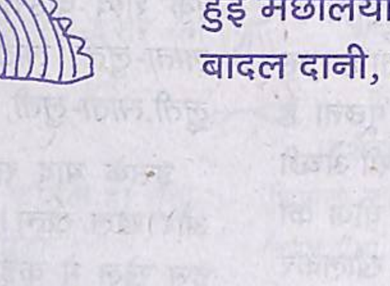


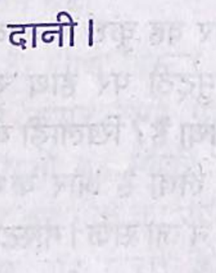


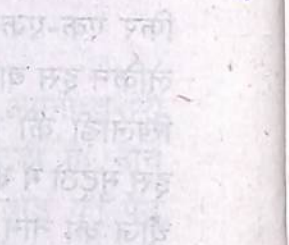
चमचम चमकी बिजली रानी
उठी गगन में घटा सुहानी,
बादल दानी, बादल दानी
खूब झमाझम बरसो पानी

प्यासी चिड़िया प्यासी गैया,
खाली हैं सब ताल-तलैया,
सूखे घाट पड़ी है नैया,
हुई मछलियों को हैरानी,
बादल दानी, बादल दानी।



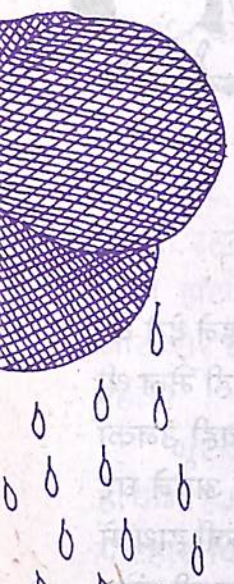






दानी





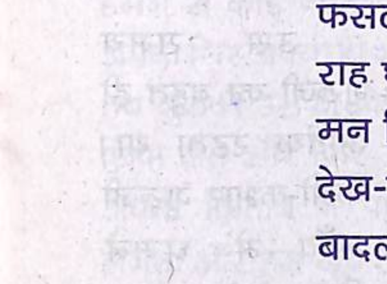


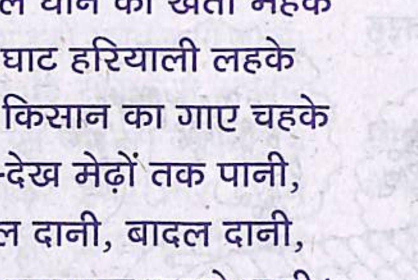
सागर से भर भर जल लाते,
गाँव-गाँव में रस बरसाते
सब जीवों की प्यास बुझाते
धरती हो जाती है धानी
बादल दानी, बादल दानी।



फसल धान की खेतों महके
राह घाट हरियाली लहके
मन किसान का गाए चहके
देख-देख मेढ़ों तक पानी,
बादल दानी, बादल दानी,
खूब झमाझम बरसो पानी।

● बाबूलाल शर्मा प्रेम
● चित्र : दुर्गा बाई









अब तक इस श्रृंखला में कई लोगों ने अपने स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें लिखीं। तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें। इस बार उत्तरकाशी, उत्तर प्रदेश के श्री हेमराज भट्ट ने अपने गुरुजी के बारे में लिखा है, तुम भी पढ़ो।

प्यार भी करते थे गुरुजी

तब मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। यह कोई पच्चीस-छब्बीस वर्ष पहले की बात है। तब हमारे स्कूल में एक ही गुरुजी हुआ करते थे। पाँचों कक्षाओं के साठ बच्चों को वे एक साथ पढ़ाया करते थे। वे पहले हमें, पाँचवीं कक्षा के बच्चों को पढ़ाते और फिर हमें छोटी कक्षाओं, पहली-दूसरी कक्षाओं में भेज देते। हम उन्हें कुछ लिखाते, तब तक वे तीसरी और चौथी कक्षा को पढ़ाते थे। यही क्रम दिन भर चलता। इस तरह किसी भी कक्षा को वे खाली नहीं रहने देते थे।

स्कूल में एक कुर्सी और एक ही मेज थी जो गुरुजी के कमरे में रहती थी। वही उनका ऑफिस भी था। हम पढ़ने के लिए अपने घर से लाये बोरों पर बैठते थे। और गुरुजी हाथ में एक मोटा डण्डा (रूल) लिए विद्यालय की मुंडेर पर बैठते थे, जिसे हमसे पहले वाले विद्यार्थियों ने बनाया था।



उस समय गुरुजी का बहुत ही आतंक रहता था। कभी-कभार गुरुजी गाँव में घूमने निकलते थे। उन्हें दूर से देखते ही हम घरों में दुबक जाते थे। रास्ते में आते दिखते तो दूर से क़न्नी काटकर निकल पड़ते। शायद ही कभी हमने विद्यालय के बाहर गुरुजी का सामना किया हो। वे

भी हमारे साथ बहुत ही मेहनत किया करते थे।

हम पाँचवीं कक्षा के छात्रों को रात को अपने घर बुलाते और रात को ग्यारह-बारह बजे तक पाठ याद करवाते। खुद खाट पर बैठकर तकली कातते रहते। हम ऊँघते, कभी झटके खाते और जोर जोर से रट्टे लगाते रहते।



गुरुजी ने शायद ही कभी हमारे साथ हास-परिहास किया हो। वे सदैव कठोर रहते थे। हाँ कभी-कभी रात को वे एक-दो मज़ाक हमारे साथ कर लिया करते थे। जब हममें से कोई पढ़ते-पढ़ते ऊँघने लगता और अपना सिर अपनी ही गोद में रखकर सो जाता, तब गुरुजी उसकी किताब सामने से उठाकर छिपा लेते और फिर उसे जगाते। वह सामने अपनी किताब न पाकर इधर-उधर देखने लगता और हम खूब हँसते। कभी-कभी ऊँघते लड़के की नाक में गुरुजी रूई का फुआ दे देते, या कभी लड़के की चोटी छत से बाँध देते आदि।

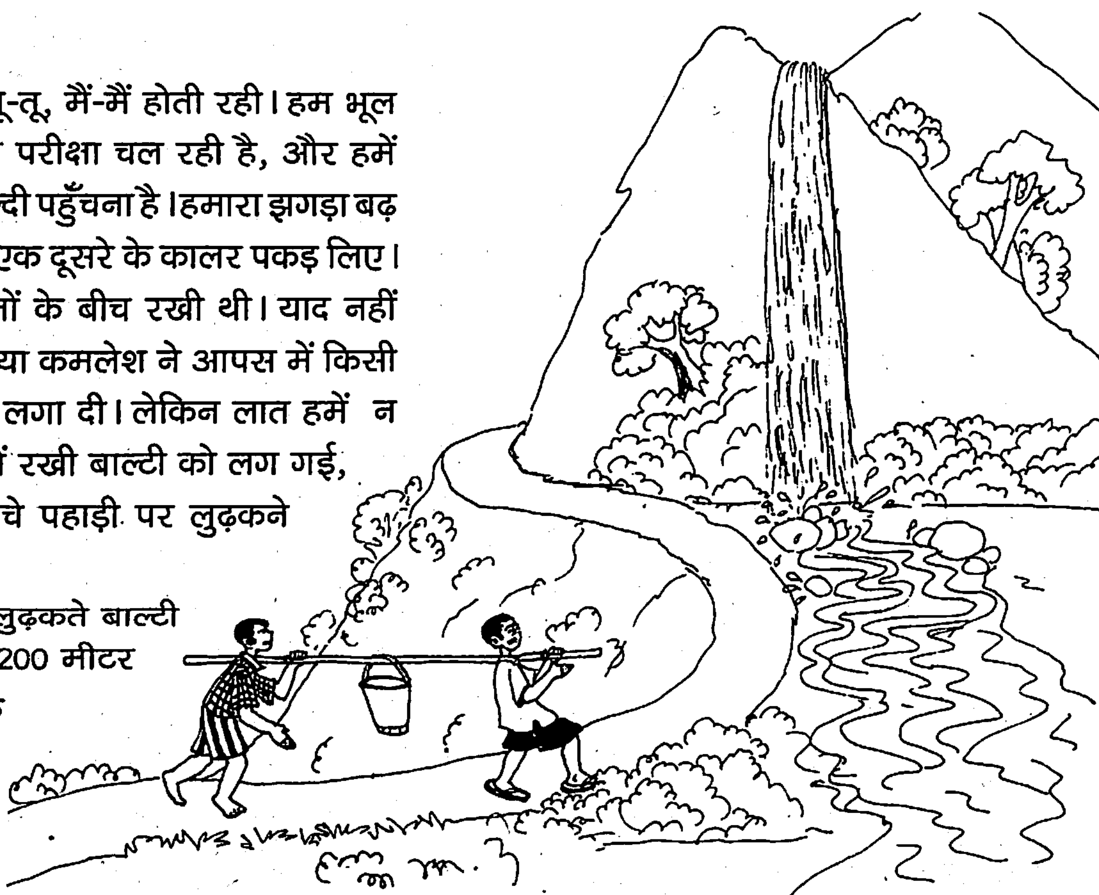
उन दिनों छात्रों में गुरुसेवा भाव बहुत अधिक था। गुरुजी का खाना बनाना, बर्तन धोना, दूर झरने से डण्डे के सहारे बाल्टी लटकाकर पानी लाना, झाड़ू लगाना आदि सभी काम बच्चे ही करते थे।

एक दिन की बात है। हमारी पाँचवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा हो रही थी। हमारा विद्यालय क्षेत्र के 7-8 विद्यालयों का भी परीक्षा केन्द्र था। दो दिन में ही हमारी परीक्षाएँ हो जाया करती थीं। परीक्षा का दूसरा दिन था। और मौखिक परीक्षाएँ लेने के लिए विद्यालय में एस.डी.आई. महोदय भी आए हुए थे। परीक्षा की प्रथम पारी पूरी हो गई थी। मध्यान्तर था।

गुरुजी ने मुझे और मेरी ही कक्षा के दूसरे छात्र कमलेश को डण्डा और बाल्टी देकर पानी के लिए भेज दिया। और हिदायत दी कि 'तुरन्त पानी भरकर लौट आओ। फिर परीक्षा की दूसरी पारी शुरू होनी है।' झरना आधा किलोमीटर दूर था। दौड़कर जाना था और झरने से पानी भरकर डण्डे के सहारे बाल्टी लटकाकर लौट आना था।

हम बाल्टी और डण्डा लेकर चल पड़े। खाली बाल्टी डण्डे से लटका दी और डण्डे के दोनों छोर आगे-पीछे चलते हुए अपने कन्धों पर रख लिए। रास्ते में किसी बात पर हम दोनों में झगड़ा हो गया। पहले तो हम बड़बड़ करते आगे बढ़ते रहे, लेकिन जब बात आगे बढ़ गई तो हमने बाल्टी नीचे रख दी और आमने-सामने

खड़े हो गए। तू-तू, मैं-मैं होती रही। हम भूल गए कि हमारी परीक्षा चल रही है, और हमें पानी लेकर जल्दी पहुँचना है। हमारा झगड़ा बढ़ गया तो हमने एक दूसरे के कालर पकड़ लिए। बाल्टी हम दोनों के बीच रखी थी। याद नहीं आता कि मैंने या कमलेश ने आपस में किसी दूसरे को लात लगा दी। लेकिन लात हमें न लगकर बीच में रखी बाल्टी को लग गई, और बाल्टी नीचे पहाड़ी पर लुढ़कने लगी।



लुढ़कते-लुढ़कते बाल्टी नीचे कहीं दूर 200 मीटर के लगभग एक सीढ़ी नुमा खेत में अटक गई। हम दोनों सन्न रह गए। अब क्या हो? लेकिन झगड़ा फिर शुरू हो गया कि बाल्टी कौन लाए? मैं कहता कि तूने लात मारी है तू जाकर बाल्टी ऊपर ला। वह कहता कि मैंने लात मारी है, इसलिए मैं नीचे उतरकर बाल्टी लाऊँ।

उधर गुरुजी को चिन्ता होने लगी कि दोनों लड़के कहाँ गए? पहाड़ी रास्ते में गिरने लुढ़कने का भी डर रहता है। उन्होंने समझ लिया होगा अवश्य ही हम झगड़ रहे हैं सो गुरुजी हमें ढूँढने निकल पड़े। जब हमने नीचे खेत की ओर देखा तो गुरुजी हाथों में बाल्टी लिए पहाड़ी चढ़कर ऊपर आ रहे हैं। अब तो जैसे काठ मार गया था। मार कितनी पड़ेगी, कल्पना भी नहीं कर सकते थे। ऊपर से परीक्षा भी छूट गई थी। अब परीक्षा का भी ध्यान आ गया था। गुरुजी पहाड़ी चढ़कर हमारे पास आ गए, हमारा तो खून सूख रहा था। उन्होंने घूरते हुए हमें देखा और बोले, ''जाओ परीक्षा शुरू हो गई, स्कूल में जाओ।'' हमने बिना मुँह खोले, उनसे बाल्टी लेनी चाही तो वे फिर गरज कर बोले, ''जाओ, स्कूल जाओ।''

हम स्कूल में लौट आए, पर्चे बँट गए थे। हमने पर्चे दिए। किन्तु दिन भर डर बना रहा कि अब छुट्टी के बाद धुनाई होगी। उस दिन गुरुजी ने कुछ नहीं कहा। तो घर पर भी चैन की नींद नहीं आई। सपने आते रहे कि अब कल स्कूल में प्रार्थना के बाद जमकर पिटाई होगी। भला गुरुजी कभी इतनी बड़ी गलती माफ कर सकते हैं। लेकिन गुरुजी ने अगले दिन भी कुछ नहीं कहा। और फिर कभी उस घटना की चर्चा तक नहीं की। वह घटना याद आती है तो आज लगता है कि गुरुजी प्यार भी करते थे हमें।

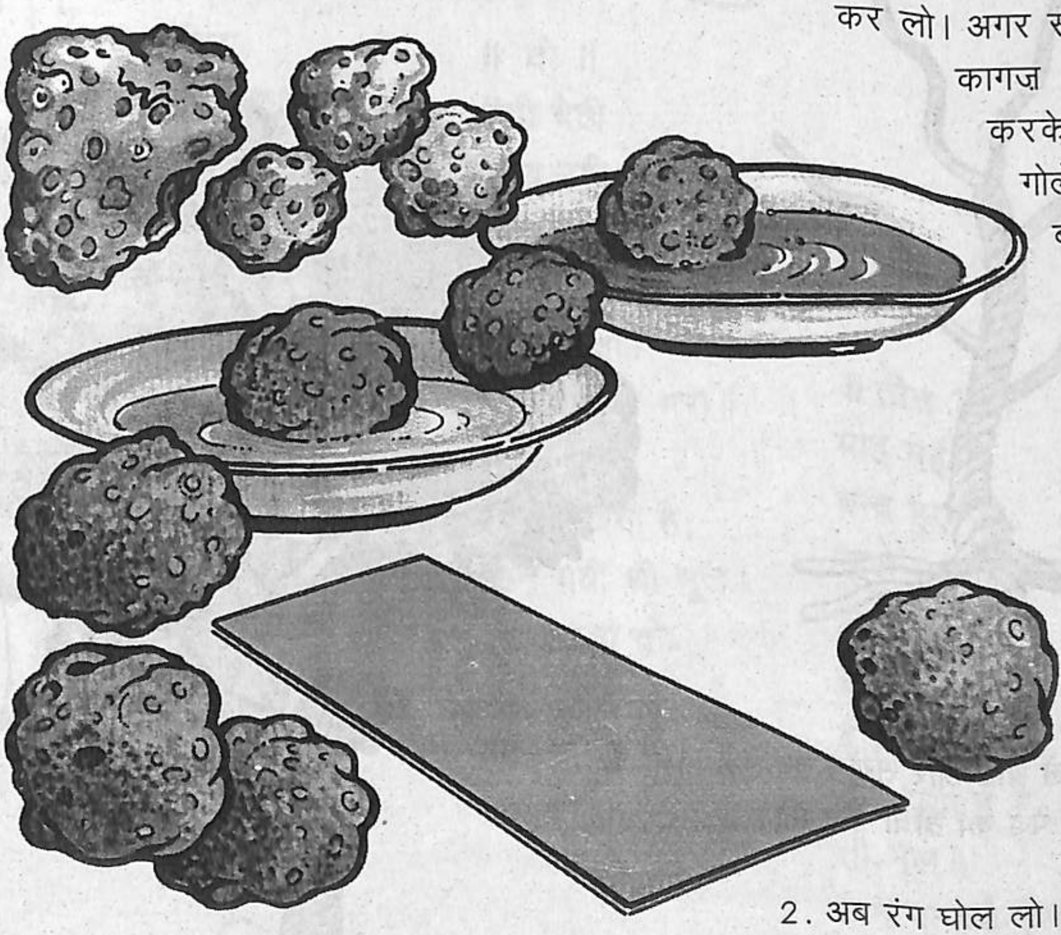
● हेमराज भट्ट 'बालसखा', उत्तरकाशी, उत्तरप्रदेश

● चित्र : शिवेंद्र पांडिया

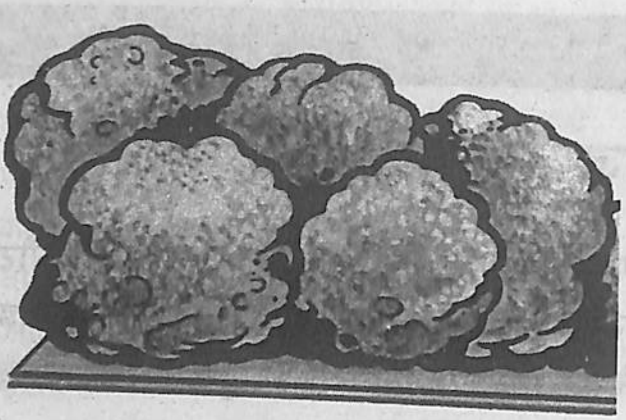
पेड़

इस पेड़ को बनाने के लिए तुम्हें बोतल साफ करने वाले ब्रश, स्पंज के टुकड़े, रंग और गोंद आदि की ज़रुरत होगी। बोतल साफ करने का ब्रश न मिले तो थोड़ा मोटा तार जुगाड़ लो। स्पंज न मिल सके तो पतले कागज़ से काम चल जाएगा। चलो शुरू करते हैं एक बहुत सुन्दर पेड़ बनाना।

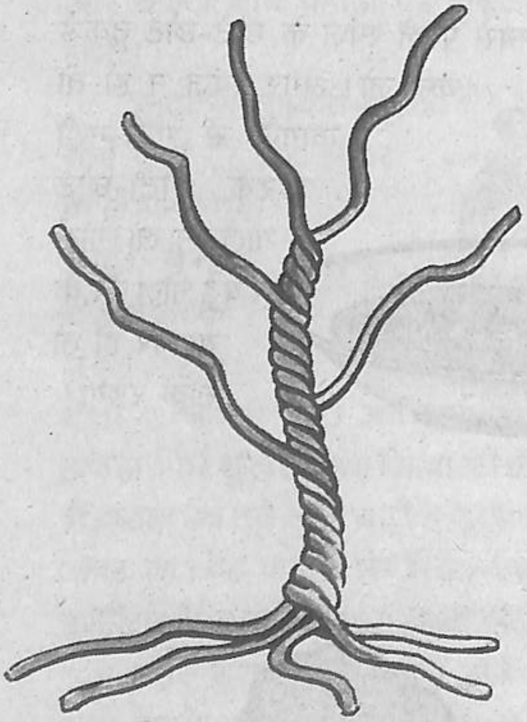
1. सबसे पहले स्पंज के छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। अगर स्पंज न हो तो कागज़ से गुड़ी-मुड़ी करके छोटो-छोटे गोले बना लो। गोले बड़े गोल बेर के बराबर हों तो ठीक रहेगा।

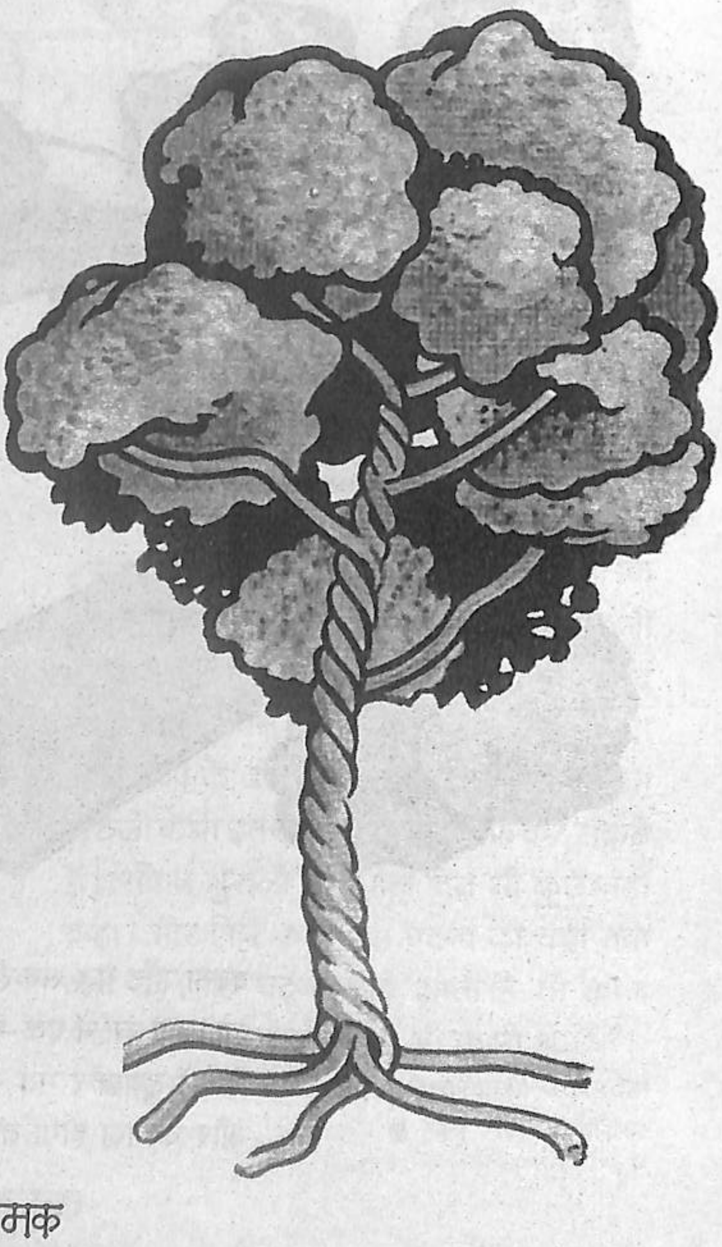


2. अब रंग घोल लो। (रंग घोलने के लिए प्लेट लेने से पहले माँ से ज़रूर पूछ लेना वरना डाँट पड़ सकती है।) एक प्लेट में हरा और एक में पीला रंग बना लो। इस रंग में एक-एक गोले को डुबाकर रंगते जाओ। ज़्यादा देर तक रंग में डुबाकर मत रखना वरना स्पंज होगा तो ज़्यादा रंग पी जाएगा। और कागज़ होगा तो गल जाएगा।



3. तीन-चार परतों वाला एक अख़बार बिछाकर पहले से ही रख लो। एक-एक गोले को रंगते जाओ और उसे अख़बार पर से लुढ़काकर एक तरफ करते जाओ। इससे रंग मिलते भी जाएँगे और गोले थोड़े सूखते भी जाएँगे।

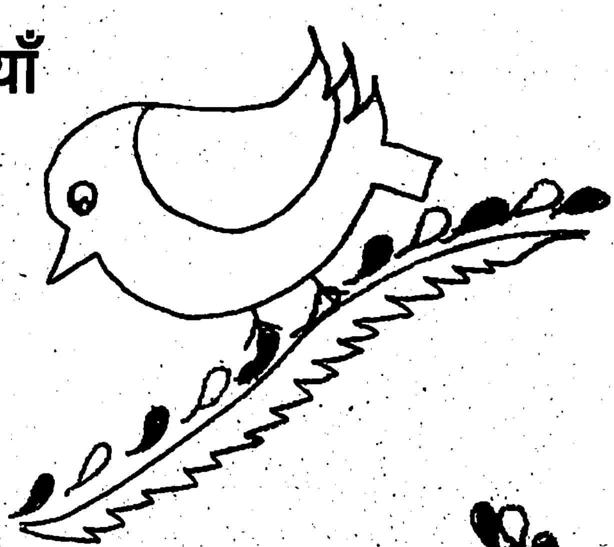




4. जब तक गोले थोड़े और सूखेंगे तब तक तार को मोड़कर पेड़ का ढाँचा बना लो।

5. फिर गोलों में गोंद लगा-लगाकर पेड़ के ढाँचे पर चिपकाते जाओ। पेड़ में जितनी चाहो शाखाएँ बना सकते हो। जिस आकार का चाहो पेड़ बना सकते हो। तुमने कैसा पेड़ बनाया हमें ज़रूर बताना।

पहेलियाँ



॥ एक ॥

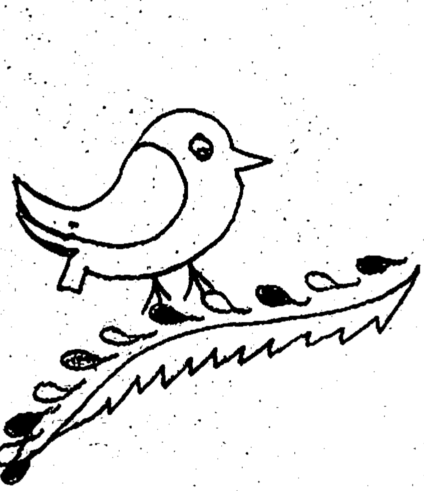
कक्षा तीन का
पढ़ने वाला,
नाम था उसका कल्लू।
लगनशील था
तेज बुद्धि था,
तनिक नहीं था निठल्लू॥
टीचर जी ने
ले परीक्षा,
दे दी थी कक्षा पाँच।
किस कक्षा को
पार कर गया,
बतलाओ कर जाँच॥

॥ दो ॥

दीदी बैठी
लिख रही थी,
पाटी पर ककहरा।
सुन्दर अक्षर
त थ द तक,
पाटी को था भरा॥
इसके आगे
क्या लिखना है,
बहन गयी थी भूल।
तुम बतला दो
आगे इसके
गर जाते हो स्कूल॥

॥ तीन ॥

माह मई में
बन्द हुए जो,
खुले जुलाई में
स्कूल।
खेल-कूद में
बीच महीना,
अरे गया हूँ मैं
तो भूल॥
नाम बताओ इसका
चटपट,
पानी बरसे पटपट
पटपट॥



● गोपी चन्द श्रीनागर
● चित्र : रीना पांचाल



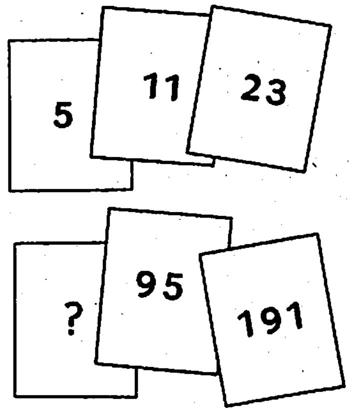
माथापच्ची

(1)

मेरे पास 6 कार्ड थे जिन पर संख्याएँ लिखी हुई थीं। एक कार्ड गुम जाने से मैं चौथी संख्या के बारे में अनुमान लगा रहा हूँ। तुम भी सोचो!

पहले कार्ड पर 5, दूसरे पर 11, तीसरे पर 23, चौथा गुम गया, पाँचवें पर 95 और 191 छटवें कार्ड पर।

यह चौथा नम्बर क्या होगा? ?



(2)

15 अगस्त पर तुम सभी ने तिरंगा झंडा फहराते हुए देखा होगा। हमारे राष्ट्रीय ध्वज के बारे में तुम बता सकते हो कि इसके बीच के चक्र में कितनी रेखाएँ या दाँते हैं?

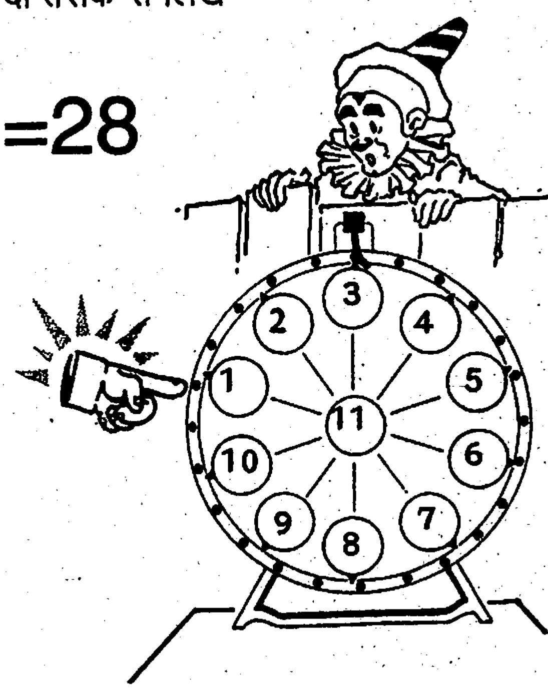
(3)

क्या तुम 1729 को दो अंकों के घन के योग के रूप में दो तरीके से लिख सकते हो। दो अंकों के घन का योग यानी– जैसे

$$(1)^3 + (3)^3 = 1 + 27 = 28$$

(4)

इस पहिये में कुछ अंक लिखे हैं। हर सीधी लाइन में तीन अंक हैं। इस स्थिति में इन तीन अंकों का योग अलग-अलग आ रहा है। जैसे यदि 10 वाली लाइन देखें तो (10+11+5) = 26 आता है। और 1 वाली लाइन में (1+11+6) = 17 आ रहा है। क्या तुम इन्हीं अंकों को इस प्रकार से जमा सकते हो कि सभी सीधी रेखाओं के तीन अंकों का योग 18 ही आए।



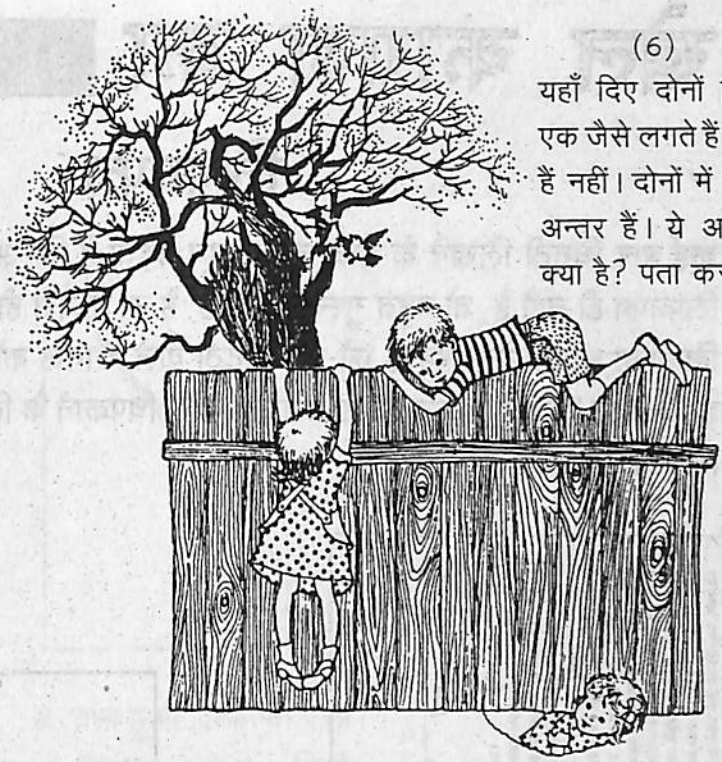
(5)

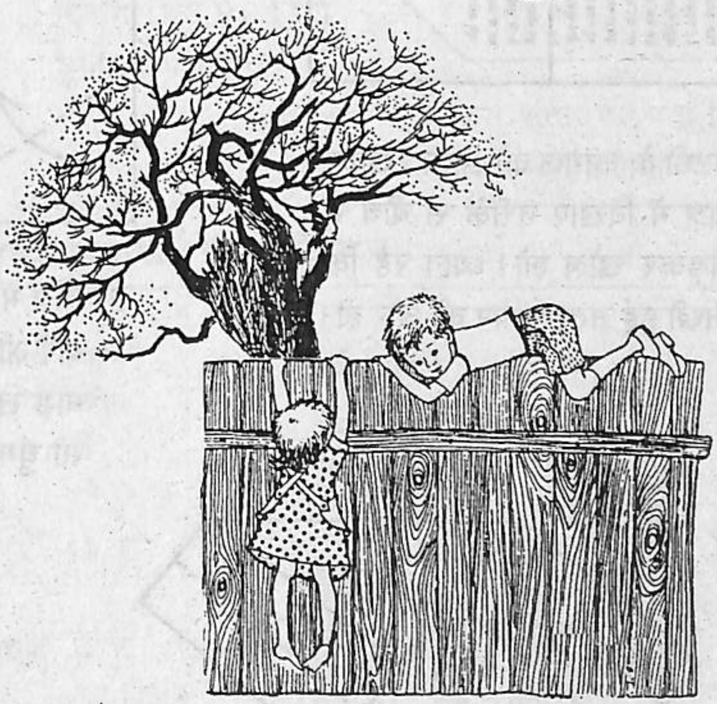
रवि अपने दोस्त को अपनी आयु इस तरह बताता है कि उसके पिता की आयु उससे चार गुनी है और 10 साल बाद उसके पिता की आयु उसकी आयु की तीन गुनी होगी।

क्या तुम बता सकते हो कि रवि की आयु क्या होगी?

(6)

यहाँ दिए दोनों चित्र एक जैसे लगते हैं, पर हैं नहीं। दोनों में पाँच अन्तर हैं। ये अन्तर क्या है? पता करो।





(7)

दो व्यक्ति एक जगह से दो अलग-अलग दिशाओं में 60^0 डिग्री का कोण बनाते हुए मुड़ जाते हैं। यदि वे दोनों एक कि.मी. प्रति घंटा की समान चाल से चल रहे हों तो एक घंटे बाद वे एक दूसरे से कितनी दूरी पर होंगे?

(8)

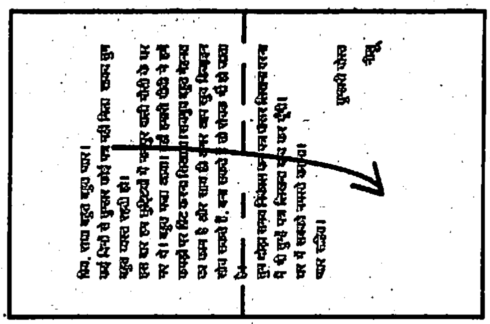
1 से लेकर 9 तक के अंकों का जोड़ 45 होता है। क्या तुम पाँच-पाँच अंकों के ऐसे दो समूह ढूँढ सकते हो, जिनके जोड़ बराबर हों?

हाँ, जोड़ पूर्णांक में होना चाहिए तथा एक समूह में एक अंक का प्रयोग एक ही बार करना है।

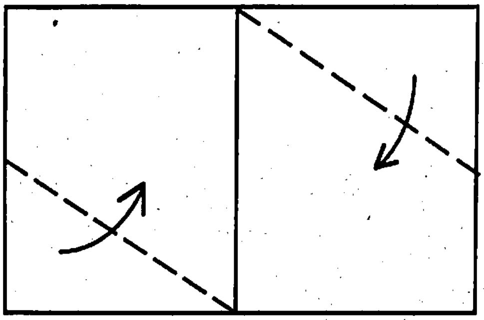
खेल कागज़ का

लिफाफा

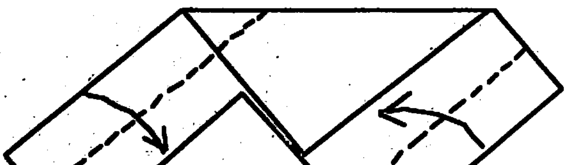
कई बार चिट्ठी लिखने के बाद जब मालूम पड़ता है कि अपने पास उसे भेजने के लिए लिफाफा ही नहीं है, तो बहुत गुस्सा आता है, है न! तो ऐसे ही मौकों के लिए यहाँ एक ऐसा लिफाफा बनाना बता रहे हैं जो तुम चिट्ठी वाले कागज़ को ही मोड़कर बना सकते हो। इसके लिए चौकोर कागज़ भी नहीं लगता, और चिपकाने के लिए गोंद भी नहीं। और झटपट लिफाफा तैयार।



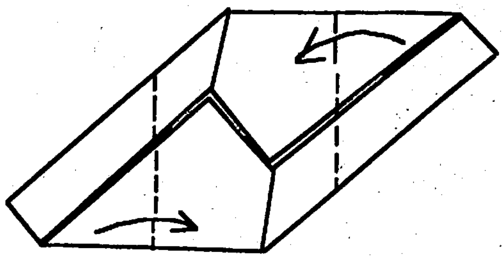
1. चिट्ठी के कागज़ को आड़ा रखकर चित्र में दिखाए तरीके से बीच से मोड़कर खोल लो। ध्यान रहे कि लिखी हुई सतह ऊपर की ओर हो।



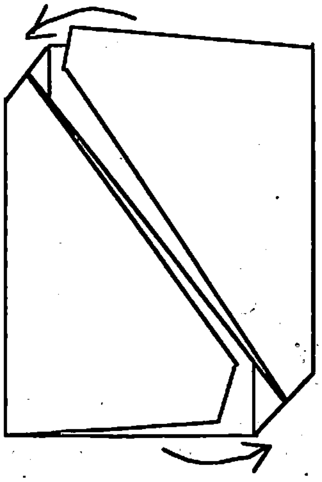
2. चित्र में दिखाए तरीके से नीचे के बाएँ और ऊपर के दाहिने कोने को मोड़ लो। फिर आकृति को थोड़ा सा घुमाकर सीधा कर लो।



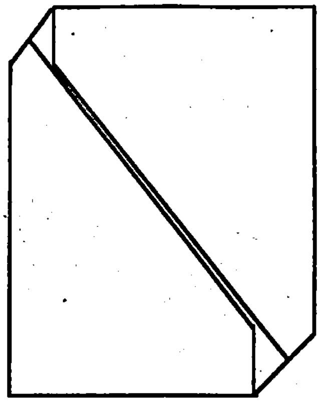
3. ऐसी आकृति मिलेगी। इसमें दिखाई गई किनारे वाली पट्टियाँ मोड़ लो।



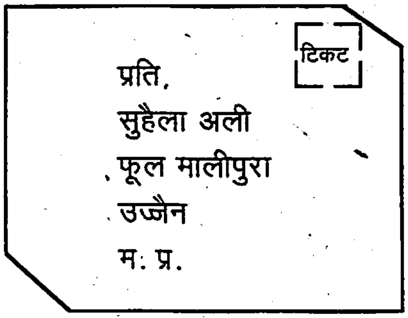
4. इस आकृति में दिखाए मोड़ भी बना लो।



5. तुम्हें ऐसी आकृति मिली होगी। इसमें जहाँ कोने में त्रिभुज बने हैं, वहां कागज़ के ऊपरी परत के नीचे दो त्रिभुज दिखाई देंगे। कागज़ के ऊपरी परत को इन त्रिभुजों में फँसा दो, जेबों में भरने की तरह।



6. बना हुआ लिफाफा ऐसा दिखेगा। इसे 90 डिग्री घुमाकर पलटा लो।



7. इस सतह पर पता लिखकर डाक टिकट लगाकर भेज दो।

माथापच्ची अगस्त 1999 के हल

2. सबसे ऊपर वाली या सबसे नीचे वाली। यानी उत्तरी गोलार्द्ध की या दक्षिणी गोलार्द्ध की अंतिम रेखा। क्योंकि इसकी लम्बाई सबसे कम होगी।

3. 22.9 मीटर (लगभग)

4. $-3^2 = +9$

5. $\frac{1}{6}$ दोनों की। चाहे महिलाएँ हों या पुरुष

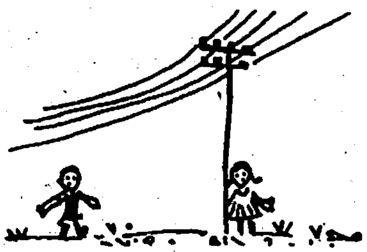
7. 4 मिनिट 42 सेकेण्ड (लगभग)

गणित पहेलियाँ

1. 6

2. 4 टीमें

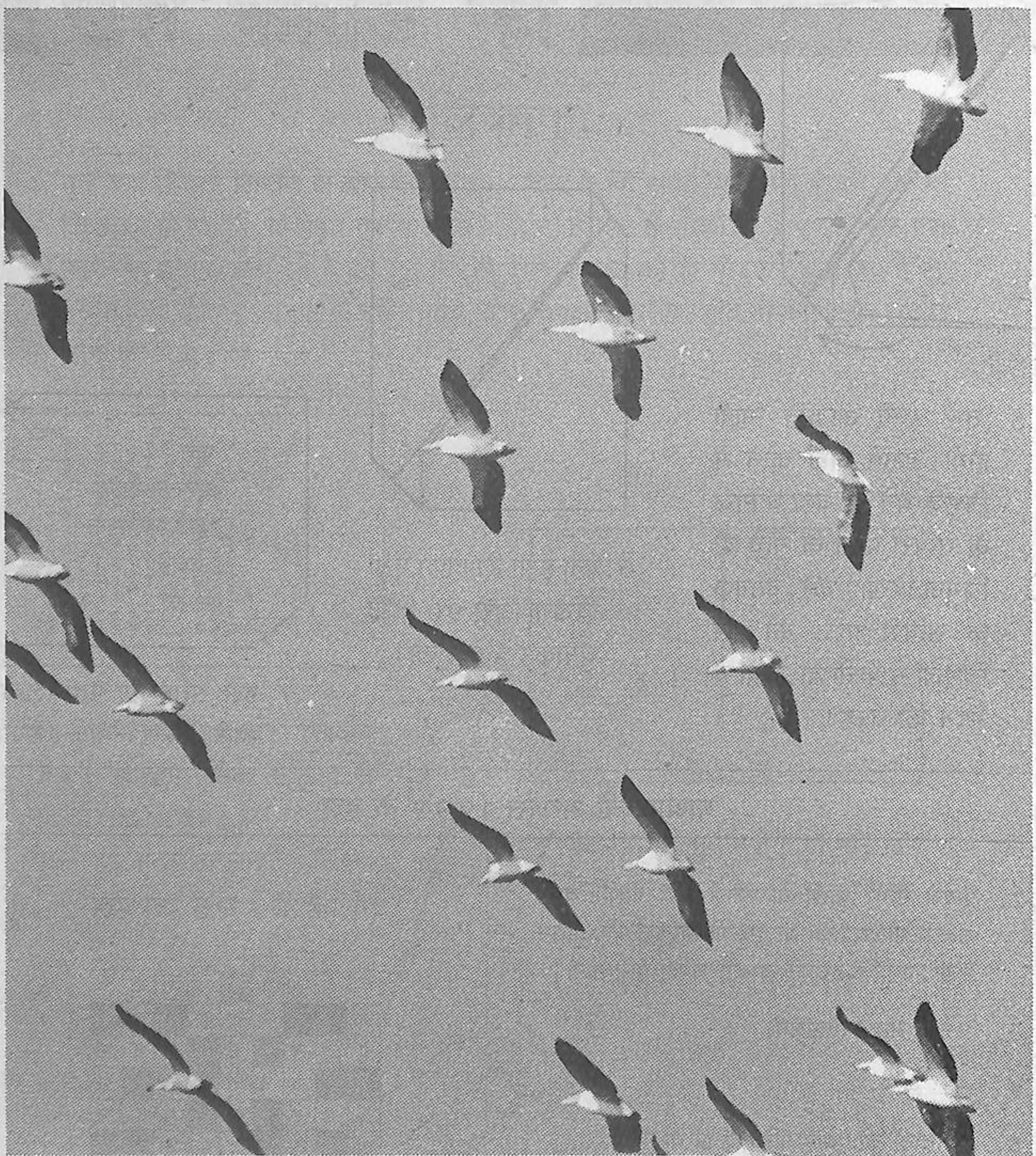
3. 5



वर्ग पहेली - 96 का हल

ब	ही	खा	ता		खा	न	दा	न
जा			क	बा	ड़ी		ला	
ज	नू	ब		ल		मा	न	स
		द	ड़	बा		ल		न
सु	ल	ह		ल		गो	दा	न
र्खा		वा		ब	ड़ो	दा		
ब	र	स		च		म	र्या	दा
	म		सु	ना	र			व
न	क	सी	र		ज	ल	पा	न

वर्ग पहेली का सही हल भेजने वाले पाठक हैं : गायत्री नाटेकर, शाजापुर, म. प्र. और समीक्षा धामारीकर, राउरकेला, उड़ीसा।



पाठक लिखते हैं

चकमक बच्चों की एक रोचक ज्ञानवर्धक पत्रिका है परन्तु फिर भी इसमें कुछ कमियाँ हैं जिन्हें दूरकर चकमक को श्रेष्ठ बाल–विज्ञान पत्रिका बनाया जा सकता है। चकमक को श्रेष्ठ बाल विज्ञान पत्रिका बनाने हेतु मेरे कुछ सुझाव निम्नांकित हैं–

(1) चकमक को सम्पूर्ण बाल विज्ञान पत्रिका बनाने हेतु बाल विज्ञान से सम्बंधित विषयों जैसे– विज्ञान लोक, नन्हें वैज्ञानिक, विज्ञान पहेली, महान वैज्ञानिक, सवालीराम, खेल खेल में विज्ञान के प्रयोग आदि स्थायी स्तम्भों को शुरू किया जाए। इसके अलावा वृक्षों की दुनिया, विचित्र जीव जन्तु, आदि स्तंभ भी शुरू करें।

(2) चकमक के सभी पाठकों की हमेशा से यह माँग रही है कि चकमक के पृष्ठों की संख्या में वृद्धि की जाए। कृपया चकमक के पृष्ठों की संख्या बढ़ाने का कष्ट करें।

● **राजुल मालपानी, सांडिया रोड़, पिपरिया, म.प्र.**

जुलाई '99 अंक मिला। कीमत में अप्रत्याशित वृद्धि ने चकित किया। लेकिन खाने, सोने की तरह चकमक पढ़ने की जगह भी बन चुकी है। अब यह खाली नहीं हो सकती।

कवर के सभी चित्र अच्छे लगे। बच्चों की कविताएँ 'बादल आये', 'पढ़ाई', 'कमरा' अच्छे लगे। 'मैं कैदी के पास बैठा' बहुत गजब की रचना है। बच्चे जो देखें उसको कह दें, लिख दें, ऐसी क्षमता आप की पत्रिका विकसित कर रही है। यह एक बड़ी बात है। बधाई!

मेरे स्कूल के बच्चों ने भी वादा किया है कि वे लिखेंगे।

● **सुभाष, शेरघाटी, गया, बिहार**

चकमक का अगस्त अंक देखा। 'हमारे शिक्षक' के अंतर्गत साजू और शशि के संस्मरण पढ़े। बहुत अच्छे लगे। इन संस्मरणों की तो एक पुस्तक भी छाप सकते हैं। इसी तर्ज पर 'हमारे स्कूल' और 'हमारे छात्र' पर भी संस्मरणों की शृंखला शुरू करें। मुझे लगता है इससे 'चकमक' में सिर्फ चिंगारी ही नहीं 'रस' भी बढ़ेगा। मेरे ख्याल से प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में स्कूल, शिक्षक को लेकर कोई न कोई संस्मरण मौजूद होते हैं। इस शृंखला को जारी रखेंगे तो अच्छा लगेगा। 'खेलगीत' कालम भी अच्छा लग रहा है ।

● **धमेन्द्र पारे, हरदा, म.प्र.**

चूँकि पापा की पोस्टिंग कलकत्ता में है, तो हम आजकल उन को मिलने यहाँ आए हुए हैं पर हमारा घर दिल्ली में है। मैंने चकमक पापा के आफिस में देखी। बहुत ही अच्छी लगी। पहली बार में ही इस से प्यार हो गया। मैंने पापा से कहा कि इसे वह दिल्ली भी भेजा करें। मैंने एक छोटी सी ड्राइंग बनाई है। उसे व इस पत्र के साथ भेज रही हूँ। आशा करती हूँ कि आप को यह पसन्द आएगी व आप इसे थोड़ी सी सिर्फ थोड़ी सी जगह चकमक में देंगे तो मुझे खुशी होगी।

● **मेघा नागपाल, कलकत्ता, प. बंगाल**

यहाँ से काट लें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक भेजना शुरू करें–

नाम .... मोहल्ला ....

डाकघर .... जिला ....

पिन [ ][ ][ ][ ][ ][ ]

सदस्यता शुल्क रु.

छह माह	एक साल	दो साल	तीन साल	आजीवन
50.00	100.00	180.00	250.00	1000.00

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

मेरा पन्ना

पेड़ से गिरा

एक बार मैं और मेरी बहन अर्चना, हम दोनों खेत में जाने की तैयारी कर रहे थे। इतने में मेरा छोटा भाई भरत आ गया, और हमारे साथ खेत पर जाने के लिए जिद्द करने लगा। हम उसे भी लेकर खेत पर घूमने के लिए चल पड़े।

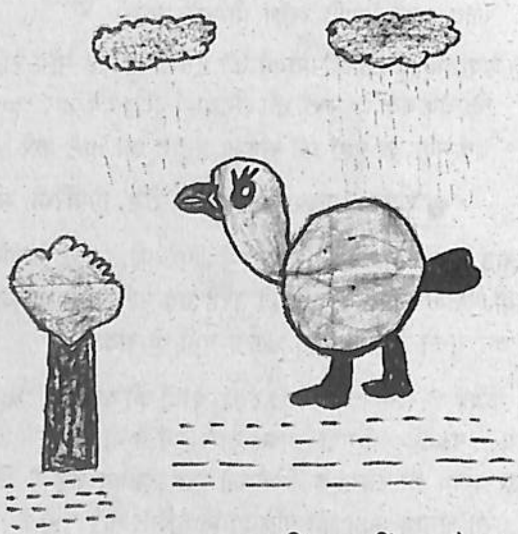
हम खेत पर गए। वहाँ तीन पेड़ बेर के लगे हुए थे। मेरी बहन अर्चना को बेर बहुत पसंद हैं। वह मुझसे बेर तोड़ने को कहने लगी। मेरा छोटा भाई बोला, ''दीदी तुम हर काम भैया को ही क्यों करने को कहती हो? मैं बेर तोड़ूँगा।''

तो मेरी बहन उसे डाँटकर कहने लगी, ''कामचोर, घर पर तुझे कोई काम बताता है तो तू उसे यूँ ही समझकर छोड़ देता है, अब जब पेड़ पर चढ़ने की इच्छा हो रही है तो बड़ा सयाना बन रहा है।''

फिर भी वह जबरजस्ती पेड़ पर चढ़ गया। उसने अपने दोनों जेब बेर से भर लिए और हमें भी बहुत से बेर दे दिए। जब वह नीचे उतरने लगा तो उसका पैर फिसल गया और वह पेड़ से नीचे गिर पड़ा। हमने उसे उठाया, और उसे घर पर लाए। जब वह घर आया तो उसे हमने बिस्तर पर लिटा दिया।

मेरी मम्मी ने उसे देखा तो हमें डाँटने लगीं। और पूछा, ''यह सब कैसे हुआ?'' मेरी दीदी ने सब कुछ बता दिया। मेरी मम्मी ने उसे डाँटा। फिर वह कभी भी मेरी दीदी की अनुमति के बिना पेड़ पर नहीं चढ़ता है।

● संदीप सारन, सातवीं, खिरकिया, होशंगाबाद, म.प्र.



● पूजा खत्री, सातवीं, उज्जैन, म.प्र.

यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐



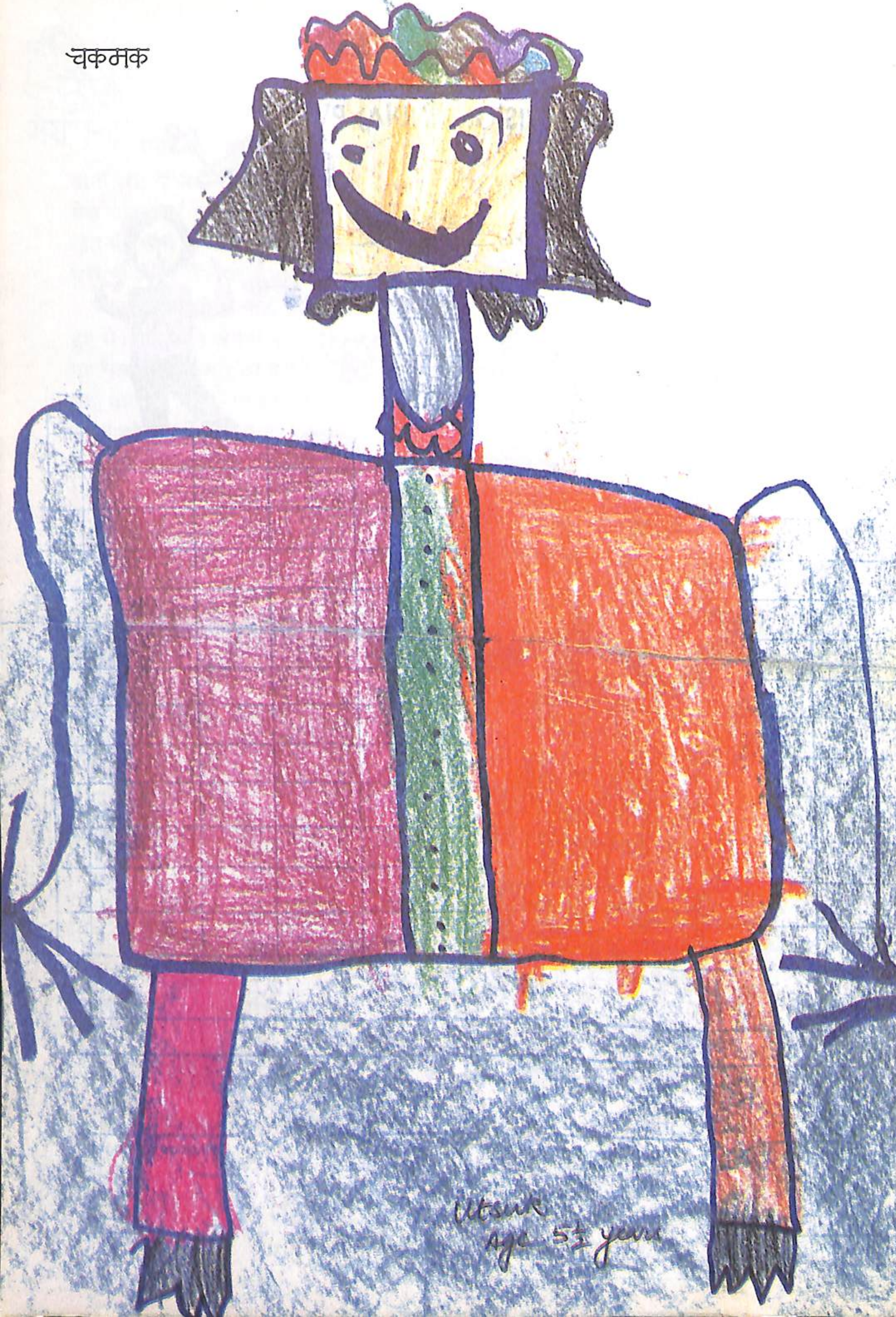
● राजा गड़वाल, छठवीं, उज्जैन, म.प्र.



● वर्षा सोनी, छठवीं, भौंरा, बैतूल, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।

संपादक : विनोद रायना



● उत्सुक, साढ़े पाँच वर्ष, दिल्ली

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक MP-2/P-431/99